# Covid-19 : Changing Paradigms of Education and Society

# कोविड-19 : शिक्षा और समाज के बदलते प्रतिमान

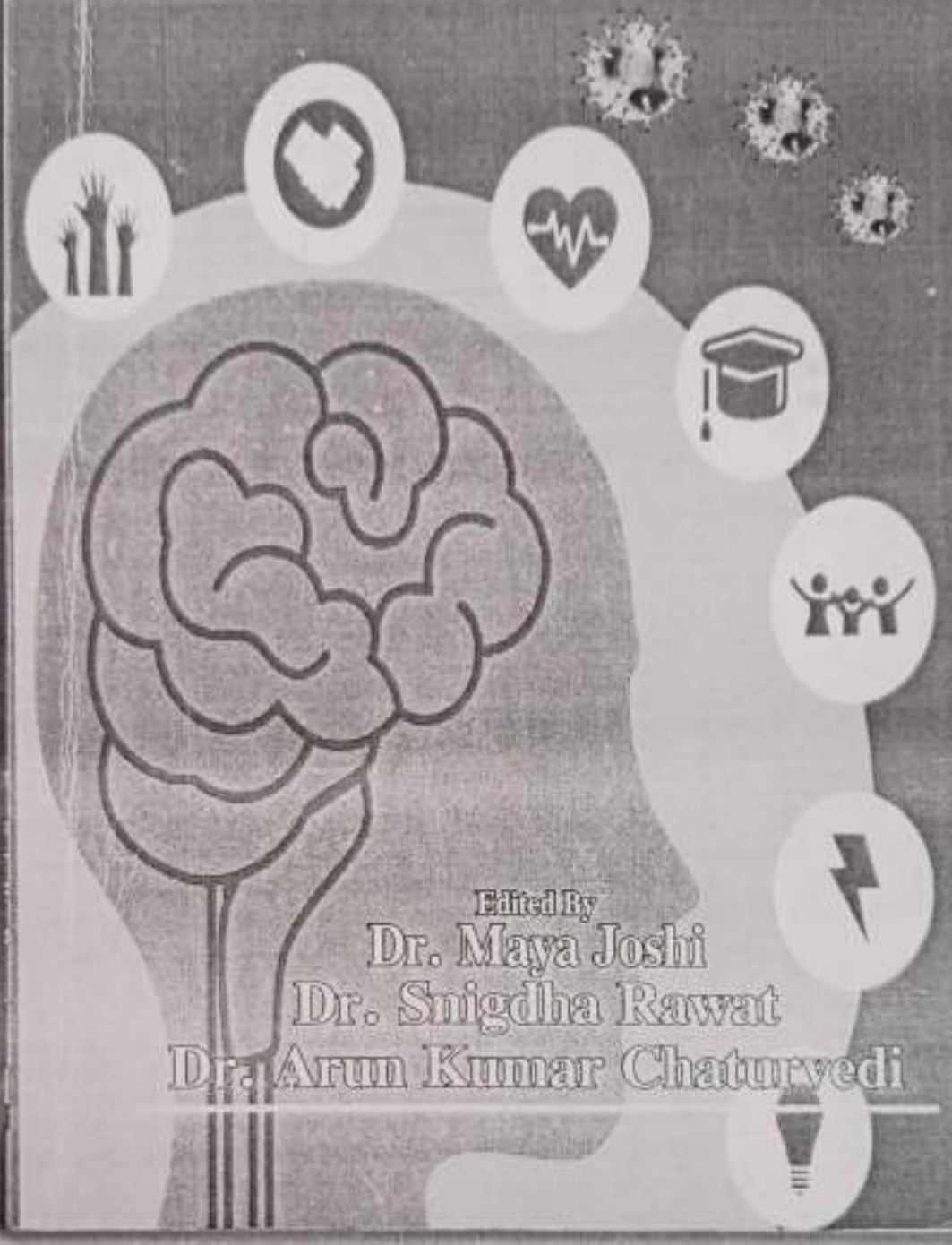

Edited By
Dr. Maya Joshi
Dr. Snigdha Rawat
Dr. Arun Kumar Chaturvedi

★ Covid-19 : Changing Paradigms of Education and Society
(कोविड–19 : शिक्षा और समाज के बदलते प्रतिमान)

★ **Editor :**
Dr. Maya Joshi, Dr. Snigdha Rawat,
Dr. Arun Kumar Chaturvedi

★ © Editor

★ **ISBN : 978-93-87697-81-2**

★ Edition : 2020

★ Price : ₹ 180.00 $10

★ ***Authorised Distributors***
**NIKHIL PUBLISHERS & DISTRIBUTORS**
37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony, Shahganj,
Agra (UP)-10 INDIA
Mob.: 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
Website : www.nikhilbooks.in

***Publisher***
**Ishika Book Distributors, Agra**
43/UK/425/25, Street No. 3, Umakunj
Behind K. K. Nagar, Sikandra, Agra-7 (U.P.)

★ Type Setting
Shikha Graphics

★ Printed By :
Anika Digital

## प्रो० विजया रानी ढौंडियाल

(हेड एवं डीन, आइ.ए.एस.ई., फैकल्टी ऑफ एजुकेशन, कुलविवि परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि बी.एड. विभाग, एस.सी.ए. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़ द्वारा 02 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी, जिसका शीर्षक 'शिक्षा का बदलता परिदृश्य: चुनौतियाँ एवं समाधान' था। का आयोजन दिनांक 08–09 अगस्त, 2020 को शिक्षा, समाज तथा शोध कार्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना था।

उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य शिक्षण के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण शोध कार्यों को बढ़ावा देना है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ रचनात्मकता का विकास भी हो सके। इस प्रकार के कार्यक्रम महाविद्यालय की शैक्षणिक प्रसिद्धि में श्रीवृद्धि तो करते ही हैं साथ ही साथ विद्यार्थियों, शोध छात्रों एवं अध्यापकों को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं, जहां नवीन ज्ञान का प्रस्तुतीकरण और विचारों का आदान–प्रदान हो सके।

दो दिवसीय वेबीनार में देश एवं विदेश के विभिन्न भागों से आये हुए विद्वतजनों शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किये गये शोध पत्रों को संकलित करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना प्रशंसनीय प्रयास है। आशा है, यह प्रयास सार्थक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अरुण

12. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की भूमिका 82
**डॉ दिनेश चन्द्र पाण्डेय**
13. शिक्षा समाज और महामारी 85
**अजरा सुल्ताना**
14. बुनियादी शिक्षा, नैतिक मूल्य एवं मानव धर्म के प्रति आत्मबोध शिक्षा की संकल्पना –वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 90
**प्रो0 सरोज वर्मा**
15. शिक्षा का परिदृश्य बदल रहा है: चुनौतियां और समाधान 95
**Dr. Richa Bhargava**
16. कोविड–19 के सन्दर्भ में शिक्षक शिक्षा की चुनौतियाँ एंव संभावनाएं 97
**डॉ0 ममता सक्टा**
17. महामारी और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया 103
**डॉ. गीता दहिया**
18. कोविड–19 महामारी एवं मानसिक स्वास्थ्य 111
**डॉ0 देबकी सिरोला**
19. वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा की चुनौतियाँ 115
**जीवन लाल यादव**
20. मानसिक स्वास्थ्य और कोरोना वायरस महामारी 119
**चंचल कुमार**
21. ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कोविड–19 का समाज में प्रभाव 128
**राजेश्वरी ग्वासीकोटी एवं डॉ0 प्रेमलता काण्डपाल पन्त**
22. कोरोना महामारी और शिक्षक 130
**डॉ0 संतोष कुमार मिश्र**
23. नई शिक्षा नीति 2020 : भाषा और सामाजिक पक्ष 135
**डॉ0 अरूण कुमार चतुर्वेदी**
24. शिक्षा नीति का भविष्य 140
**डॉ आरती वर्मा**
25. उत्तराखण्ड़ के पहाड़ी क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियां एवं समाधान 143
**कुलदीप सिंह**
26. शिक्षा की सकारात्मक व नकारात्मक भूमिका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षार्थियों पर कोविड–19 का प्रभाव विशेष सन्दर्भ में 149
**लक्ष्मी बिष्ट**

# 20.
# मानसिक स्वास्थ्य और कोरोना वायरस महामारी

चंचल कुमार

महामारी के वर्तमान परिदृश्य ने अनेक चिंताओं और चुनौतियों को जन्म दिया है। कोरोनावायरस (कोविड–19) महामारी वास्तव में संपूर्ण विश्व के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय है। कोरोनावायरस महामारी ने आज वैश्विक स्वास्थ्य संकट खड़ा कर दिया है। इस वायरस ने लोगों का सामान्य जीवन ठप्प कर दिया है या उन्हें घर के अंदर रहने,घर रहते हुए काम करने,सामाजिक (शारीरिक) दूरी बनाए रखने और व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने को मजबूर किया है। यह वैश्विक महामारी ना केवल एक गंभीर चिकित्सा चिंता है, अपितु सभी के लिए मिश्रित भावनाएं और मनो–सामाजिक तनाव भी लाती है। कोरोनावायरस महामारी शिक्षार्थियों, शिक्षकों, माता–पिता, अभिभावकों के लिए तनाव ला रहा है। बच्चों और किशोरों पर विशेष ध्यान देने के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं उभर रही है। कोरोनावायरस के बारे में समाचारों के दैनिक कवरेज के परिणामस्वरूप इनमे भावनात्मक, शारीरिक और व्यावहारिक प्रतिक्रियाएँ हो सकती है, खासकर उन शिक्षार्थियों के लिए जो या तो व्यक्तिगत रूप से वायरस से प्रभावित हुए हैं या अपने प्रियजनों के माध्यम से भावनात्मक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation) द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, तकरीबन 7.5 प्रतिशत भारतीय किसी न किसी रूप में अवसाद से ग्रस्त हैं। इतना ही नहीं WHO के अनुमान के अनुसार वर्ष 2020 तक भारत की लगभग 20 प्रतिशत आबादी मानसिक रोगों से पीड़ित होगी। मानसिक रोगियों की इतनी बड़ी संख्या के बावजूद भी अब तक भारत में इसे एक रोग के रूप में पहचान नहीं मिल पाई है। आज भी यहाँ मानसिक स्वास्थ्य की पूर्णतः उपेक्षा की जाती है और इसे काल्पनिक माना जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि जिस प्रकार शारीरिक रोग हमारे लिये हानिकारक हो सकते है,उसी प्रकार मानसिक रोग भी हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं।

कोरोनावायरस (कोविड–19) का मानव जीवन के हर क्षेत्र पर प्रभाव पड़ रहा है। इससे सभी व्यक्ति प्रभावित हो रहे हैं। इस महामारी ने देश की अर्थव्यवस्था, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं समाज को काफी नुकसान पहुंचाया है। कोरोना विषाणु (Virus) एक बड़े विषाणु परिवार का हिस्सा हैं जो जानवरों या मनुष्यों में बीमारी का कारण बनते हैं। कई कोरोना विषाणु को मनुष्यों में सामान्य सर्दी–जुकाम आदि से लेकर अधिक गंभीर बीमारियों–जैसे कि मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (मर्स) और सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (सार्स) जैसे श्वसन संक्रमणों–का कारण माना जाता है। हाल ही में पहचाना गया कोरोना वायरस कोविड–19 का कारण बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना का नाम कोविड–19 (COVID–19) रखा है, जहां ''CO'' का अर्थ है कोरोना (Corona), ''VI'' का अर्थ है वायरस (Virus), ''D'' का अर्थ है डिजीज (Disease) और 19 का अर्थ है वर्ष 2019 यानी इस वर्ष यह बिमारी पैदा हुई। इस वायरस को सबसे पहले चीन के वुहान प्रान्त में देखा गया जो धीरे–धीरे पूरे विश्व में फैल चुका हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोनावायरस महामारी एक संक्रामक बीमारी है। कोविड–19 छींक, खांसी या सांस के साथ संक्रमित व्यक्ति के नाक या मुंह से निकलने वाली छोटी–छोटी बूंदों के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंच सकता है। ये बूंदें व्यक्ति के आसपास की वस्तु और सतहों पर गिरती हैं और फिर इन वस्तुओं या सतहों को छूने पर अन्य लोगों के संपर्क में आती हैं। विषाणु तब भी फैलता है,जब एक संक्रमित व्यक्ति के खांसने, छींकने से निकली बूंदों के साथ हवा में बने सूक्ष्म तरल कण सांस के साथ दूसरे के शरीर में चले जाते हैं जब वह छींकता है,ये सूक्ष्म तरल कण हवा में कुछ समय तक तैरते रहते हैं। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है। यह बहुत ही घातक वायरस है। भारत में कोरोना वायरस के कुल आंकड़े 30 लाख पार कर गये है, स्वास्थ्य मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, देश में कुल 30,44,940 केस हैं, इसमें से 7.07 लाख एक्टिव केस हैं और 22.80 लाख लोग ठीक हो चुके हैं, अब तक कोरोना वायरस से 56 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के प्रमुख ट्रेडोस एडहानम गेब्रेयेसेस ने उम्मीद जताई है कि कोरोना वायरस दो वर्ष में खत्म हो सकता है- WHO प्रमुख ने कहा, कि ''हम दो साल से कम समय से पहले इस महामारी को खत्म करने की उम्मीद करते हैं, उपलब्ध संसाधनों के

अधिक से अधिक इस्तेमाल और इस उम्मीद से कि हमारे पास वैक्सीन जैसे टूल भी मौजूद होंगे, मुझे लगता है कि हम इसे 1918 स्पैनिश फ्लू के मुकाबले जल्द खत्म कर सकते हैं.''

माइक्रोसॉफ्ट के फाउंडर बिल गेट्स ने भी उम्मीद जताई थी कि 2021 के अंत तक वायरस खत्म हो सकता है, द इकनॉमिस्ट को दिए इंटरव्यू में गेट्स ने कहा था कि ''अगले वर्ष के आखिर तक कोरोना वायरस का असर कम हो जाएगा, क्योंकि तब तक कोई प्रभावित वैक्सीन बन चुकी होगी और ज्यादातर लोग इसके प्रति इम्यून हो गए होंगे''

जीवन में किसी एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तथा सीखने और प्रगति करने के लिए एक प्रभावी, मजबूत और उत्साहित करने वाला मनो–सामाजिक वातावरण बहुत महत्वपूर्ण होता है। शिक्षार्थियों पर कोरोनावायरस का मनो–सामाजिक प्रभाव विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा कक्षाओं को निलंबित करने और सुरक्षा कारणों से परिसरों को बंद करने के साथ शिक्षार्थियों को अचानक परिसर छोड़ना पड़ा जिससे उनके अकादमिक और सामाजिक जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ गए हैं तथा अनुभवात्मक रूप से सीखने के लिए इंटर्नशिप के रूप में अवसर कम हो गए हैं चाहे वह परिसर के भीतर हो या परिसर के बाहर। साथ ही ऑनलाइन होने के कारण अनिश्चितता और असंतोष की अधिक भावनाओं का सामना करना पड़ रहा है। कोरोनावायरस महामारी की स्थिति के परिणामस्वरूप जीवन में असामान्य और अचानक बदलाव स्थिरता,संरचना और व्यापकीकरण की अवधारणाओं को चुनौती देता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के पहले महानिदेशक डॉ० जार्ज ब्रॉक चिशहोम (Dr.George Brock Chisholm) जो कि एक मनोरोग चिकित्सक भी थे, ने कहा है कि "बगैर मानसिक स्वास्थ्य के सच्चा शारीरिक स्वास्थ्य नहीं हो सकता है" वर्षो के अनुसंधान के बाद इस बात को लेकर कोई शक नहीं रह गया है कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बुनियादी तौर पर और अभिन्न रूप से आपस में जुड़े हुए हैं। मानसिक स्वास्थ्य में हमारा भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण शामिल होता है। यह हमारे सोचने, समझने, महसूस करने और कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी स्वास्थ्य संबंधी परिभाषा में शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी शामिल करता है। मानसिक रोगों में अवसाद (Depression) दुनिया भर में सबसे बड़ी समस्या है। कई शोधों में यह सिद्ध किया जा चुका है कि अवसाद,हृदय संबंधी रोगों का मुख्य कारण है। मानसिक रोग कई सामाजिक समस्याओं जैसे–बेरोजगारी, गरीबी और नशाखोरी आदि को जन्म देती है। इंडिया स्टेट लेवल डिजीज बर्डन इनिशिएटिव (India State Level Disease

Burden Initiative) द्वारा भारत में मानसिक रोगों के संबंध में एक अध्ययन किया गया जिसे लांसेट साइकाइट्री (Lancet Psychiatry) में प्रकाशित किया गया। इसके अनुसार,अवसाद तथा चिंता भारत में मानसिक रोगों के प्रमुख कारण है तथा इनका प्रभाव दक्षिणी राज्यों और महिलाओं में अधिक है। इसके अलावा इसमें लगातार वृद्धि हो रही है। लगभग प्रत्येक 7 में से 1 भारतीय या कुल 19 करोड़ 70 लाख लोग विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगों से ग्रसित हैं। वर्ष 2017 में देश में लगभग 76 लाख लोग बाइपोलर डिसऑर्डर (Bipolar Disorder) से ग्रसित थे। इसका सर्वाधिक प्रभाव गोवा, केरल, सिक्किम तथा हिमाचल प्रदेश में देखा गया। वर्ष 2018 में लगभग 35 लाख लोग सिजोफ्रेनिया (Schizophrenia) से ग्रसित थे। इसका प्रभाव गोवा, केरल, तमिलनाडु तथा दिल्ली में सर्वाधिक था। भारत में कुल बीमारियों में मानसिक रोगों की हिस्सेदारी विकलांगता समायोजित जीवन वर्ष (Disability Adjusted Life Years ( DALY) के अनुसार, वर्ष 1990 में 2.5 प्रतिशत थी तथा वर्ष 2017 में यह बढ़कर 4.7 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2018 में भारत में मानसिक रोग DALY के सभी मामलों में 33.8: लोग अवसाद (Depression), 19: लोग एंग्जायटी डिसऑर्डर, 10.8: लोग इडियोपथिक डेवलपमेंटल इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी (Idiopathic Developmental Intellectual Disability) तथा 9.8: लोग सिजोफ्रेनिया (Schizophrenia) से ग्रसित थे। इस अध्ययन में राज्यों को सामाजिक–जनांकिकीय इंडेक्स (Socio&Demographic Index/SDI) के आधार पर तीन वर्गों– निम्न, मध्यम, तथा उच्च में विभाजित किया गया। SDI मापन में राज्य की प्रतिव्यक्ति आय, औसत शिक्षा 25 वर्ष से कम आयु की महिलाओं में प्रजनन दर जैसे पैमानों को अपनाया गया। उच्च SDI वाले राज्यों जैसे– तमिलनाडु, केरल, गोवा, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र तथा तेलंगाना में अवसाद एवं एंग्जायटी की समस्या से सर्वाधिक ग्रसित लोग थे।

**मानसिक रोगों के मुख्य कारण**

1. **न्यूरोट्रांसमिटर्स:**– मानसिक रोगों का संबध मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमिटर्स नामक विशेष रसायनों के असामान्य संतुलन से पाया गया है। न्यूरोट्रांसमिटर्स मस्तिष्क में नाड़ी कोशिकाओं को एक दूसरे से संचार करने में सहायता करते हैं। यदि ये रसायन असंतुलित हो जाएं या ठीक से काम न करें, तो संदेश मस्तिष्क में से सही प्रकार से नहीं गुजरते हैं जिससे मानसिक रोग के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

2. **आनुवंशिकता:**– कई मानसिक रोग वंशानुगत होते हैं,ऐसे लोगों में जिनके परिवार का कोई सदस्य मानसिक रोग से ग्रस्त होता है, मानसिक रोग होने की संभावना अधिक होती है। रोग ग्रस्त होने की

संभावना परिवारों में लोगों के बीच संचारित होती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि कई मानसिक रोगों का संबंध एक ही नहीं बल्कि अनेक जीनों के विकारों से होता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति मानसिक रोग से ग्रस्त होने की संभावना या आनुवंशिक गुण से प्राप्त करता है लेकिन उसका रोग से ग्रस्त होना आवश्यक नहीं है। मानसिक रोग स्वतः कई जीनों और अन्य कारकों की अंतःक्रिया के कारण होता है– जैसे तनाव, गलत व्यवहार या कोई दुखद घटना—जो इसके साथ आनुवंशिक संभावना से युक्त व्यक्ति में रोग को प्रेरित या उत्पन्न कर सकती है।

**3. संक्रमण :—** कुछ संक्रमणों का संबंध मस्तिष्क की चोट और मानसिक रोग के विकास या उसके लक्षणों के बिगड़ने से जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए– स्ट्रेप्टोकोकस बैक्टीरिया से संबंधित बालकों की स्वतः प्रतिरक्षित न्यूरो मानसिक विकार नामक एक अवस्था का संबंध बच्चों में एक ऑब्सेसिव–कम्पल्सिव विकार और अन्य मानसिक रोगों के विकास से जोड़ा जाता है, कोरोना वायरस (कोविड–19) महामारी।

**4. मस्तिष्क के दोष या चोट :—** मस्तिष्क के कतिपय भागों में विकारों या चोट लगने का संबंध भी कुछ मानसिक रोगों से जोड़ा जाता है।

मानसिक रोगों का एक महत्वपूर्ण कारक आनुवंशिक होता है। मनोविदलता या साइकोसिस, स्किज़ोफ्रेनिया इत्यादि रोग कुछ परिवारों में अधिक पाए जाते हैं, जिनके परिवार का कोई सदस्य इनसे पीड़ित होता है। इस व्यक्ति के बच्चों में यह रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। मानसिक विकार की एक वजह शारीरिक परिवर्तन भी माना जाता है। दुर्व्यवहार किशोरावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था, गर्भ–धारण जैसे शारीरिक परिवर्तनों के कारण मानसिक रोगों की संभावना बढ़ जाती है। मनोवैज्ञानिक कारणों की आज के समय में इसकी तुलना वायरस से की जा रही है। उदाहरण के लिए आपसी संबंधों में टकराहट, किसी निकटतम व्यक्ति की मृत्यु, सम्मान की हानि, आर्थिक हानि, तलाक, नौकरी या प्रेम में असफलता इत्यादि। सहनशीलता का अभाव, बाल्यावस्था के अनुभव, पारिवारिक स्थिति के प्रतिस्पर्धा, मनोवृत्तियाँ, पारिवारिक विघटन और इकलौता संतान होने की असमानता मानसिक रोगों के लिए जिम्मेदार माने जा रहे हैं। वस्तुतः ऐसे समाज में कुछ लोग हैं जो आत्मकेंद्रित और निजी जीवन जीते हुए मानसिक बीमारी (Mental Illness) बीमारी से एक गंभीर मुद्दा रहा है। इसके विषय में न केवल समाज का रवैया बदलना है बल्कि सरकार की दृष्टि से भी यह एक गंभीर विषय ही है। सरकार विज्ञापनों द्वारा कह रही है कि किसी भी मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति का मानसिक सहारा बनना है और उस व्यक्ति को समाज में उचित सम्मान से देखा जाना चाहिए। मानसिक रोग से पीड़ित

व्यक्ति समाज व परिवार के उपेक्षा पूर्ण बर्ताव के कारण अकेलेपन का भी शिकार हो जाता है। अकेलेपन के कारण वह अपने विचारों को दूसरे के साथ साझा नहीं कर पाता है, ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति या तो स्वयं को हानि पँहुचाता है या अन्य लोगों को। यदि कोई व्यक्ति एक बार किसी मानसिक रोग से ग्रसित हो जाता है तो जीवन भर उसे इसी तमगे के साथ जीना पड़ता है, चाहे वह उस रोग से मुक्ति पा ले। आज भी भारत में इस प्रकार के लोगों के लिये समाज की मुख्य धारा से जुड़ना काफी चुनौतीपूर्ण होता है।

भारत सरकार ने वर्ष 1982 में देश में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारने और इस संबंध में जागरूकता लाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (NMHP) की शुरुआत की। वर्ष 1987 में मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम (MHA–1987) लागू किया गया। वर्ष 1996 में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को देश के प्राथमिक स्तर तक पहुँचाने के लिये जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (DMHP) की शुरुआत की गई। मानसिक रोगों से पीड़ित लोगों की पूर्व जाँच और उनके इलाज के लिये जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम में विभिन्न निवारक गतिविधियों को शामिल किया गया है जिसमें स्कूल मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ, कॉलेज परामर्श सेवाएँ, कार्यस्थल पर तनाव कम करने और आत्महत्या रोकथाम सेवाएँ शामिल हैं। वर्ष 2014 को सरकार ने राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य नीति की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि इस नीति के अंतर्गत जिन बातों को शामिल किया गया,उनमें मुख्य रूप से रोगी केंद्रित और प्रगतिशील दृष्टिकोण वाले प्रावधान थे। इसके साथ–साथ इसके अंतर्गत सेवा वितरण और प्रशासन में पारदर्शिता और व्यावसायिकता लाने संबंधी प्रावधानों को भी जगह दी गई। वर्ष 2017 में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम–2017 ने मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम–1987 का स्थान ले लिया। इसके अतिरिक्त WHO मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने और बढ़ावा देने के लक्ष्य के तहत सरकारों का समर्थन करता है। वर्ष 2013 में विश्व स्वास्थ्य सभा (World Health Assembly) ने '2013–2020' के लिये व्यापक मानसिक स्वास्थ्य कार्य योजना को मंजूरी दी थी। इस योजना के तहत WHO के सभी सदस्य देशों ने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने और जागरूकता बढ़ाने के लिये अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की थी। सरकार ने मानसिक स्वास्थ्य प्रोग्राम को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के गैर–संचारी रोगों (Non-Communicable Diseases / NCD) के फ्लेक्सी पूल के अंतर्गत शामिल किया गया है। NCD के फ्लेक्सी पूल हेतु आवंटित राशि को पिछले दो वर्षों में लगभग तीन गुना बढ़ाया गया है। यानी अब राज्यों द्वारा

केंद्र–प्रायोजित योजनाओं के कोष का उपयोग विशेषज्ञों एवं अन्य सुविधाओं के भुगतान में किया जा सकता है।

ऐतिहासिक रूप से संक्रमणकारी महामारियां लोगों में चिंता और घबराहट को बडे पैमाने पर बढ़ाती है, नया रोग अपनी प्रकृति में अपरिचित होता है और इसके परिणामों के बारे में कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता है, साथ ही यह अगोचर या अदृश्य होता है, इसकी ये सब विशेषताएं इसे गंभीर चिंता का स्रोत बना देती हैं, 2003 में सार्स के प्रकोप के दौरान रिसर्चरों ने बीमारी के साथ–साथ आने वाली कई मानसिक स्वास्थ्य चिंताओं को भी रेखांकित किया, जिनमें अवसाद, तनाव और मनोविकृति और पैनिक अटैक शामिल हैं, इसके कई कारण संभव हैं, सार्स से संक्रमित और उसका इलाज पा रहे लोगों को संभवतः सामाजिक एकांतवास का भी सामना करना पड़ा, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्हें अलग–थलग रखा गया था, उनकी बीमारी को भी शायद कलंक के तौर पर देखा गया हो और जिसके कारण उन्होंने अपने साथ भेदभाव होता हुआ महसूस किया हो, यह भी संभव है कि सार्स से ग्रसित लोगों में दूसरों को संक्रमित करने का भी अपराध बोध घर गया हो।

वर्तमान में कोविड–19 से प्रभावित लोगों के अनुभवों को समझने और सार्वजनिक स्वास्थ्य की नीति बनाने के लिए इन कारकों पर ध्यान देना जरूरी है, ऐसा करके ही उनके मानसिक स्वास्थ्य की चिंताओं पर भी ध्यान दिया जा सकेगा, यह साफ है कि संक्रामक रोग सभी लोगों पर एक गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं–उन लोगों पर भी जो वायरस से प्रभावित नहीं हैं, इन बीमारियों को लेकर हमारी प्रतिक्रिया मेडिकल ज्ञान पर आधारित न होकर हमारी सामाजिक समझ से भी संचालित होती है। कोविड–19 एवं लॉकडाउन का लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड रहा है। लोगों के अंदर चिंता, भय, अवसाद, पैनिक अटैक, पछतावा, अपच, अनिद्रा आदि मनोवैज्ञानिक रोगों के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे हैं। उनमें गुस्सा, चिडचिड़ापन अत्यधिक आने लगा है। ऐसे व्यक्ति जो अपने परिवार से काफी दूर हैं, वे अत्यधिक मनोविकारों से ग्रसित होने लगे हैं। लोग खाली रहने के कारण अपना अधिकतम समय मोबाइल या लैपटॉप पर दे रहे हैं। इसके कारण वे देर रात तक सो नहीं पाते हैं। जिस तरह से बच्चे किशोर एवं व्यस्क अपने–अपने मोबाइल के स्क्रीन से चिपके रहते हैं, उनमें कंप्यूटर वर्जन सिंड्रोम होने की संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं। इंडियन सायकाइट्री सोसाइटी (IPS) के एक सर्वे में पता चला है कि लॉकडाउन लागू होने के बाद से मानसिक बीमारियों के मामले 20 फीसदी बढ़े हैं और हर पांच में से एक भारतीय इनसे प्रभावित है, इंडियन सायकाइट्री सोसाइटी (IPS) ने चेतावनी दी है कि भारत में हाल के दिनों में कई कारणों से

मानसिक संकट का प्रभाव गहरा हो रहा है, जैसे छोटी–छोटी चिंता, आर्थिक पक्ष कमजोर, अकेला रहना और घबराहट होना शामिल है, ये कारण किसी व्यक्ति को आत्महत्या के लिए भी उकसा सकते हैं, आमतौर पर छोटी–छोटी बीमारी में चिंता करना होता है, एक तरफ लोग बीमारी [illegible] चिंता में रहना [illegible] है। कोरोनावायरस (कोविड–19) महामारी के दौरान चिंता [illegible] बढ़ गई है। दुनिया भर में लोगों [illegible] है। ऐसा लगता है कि महामारी केवल मानव के स्वास्थ्य को ही प्रभावित नहीं करती [illegible] सामाजिक [illegible] को भी [illegible] है। [illegible] एक तरफ लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा। कोरोनावायरस (कोविड–19) महामारी के दौरान [illegible] है। लोगों में [illegible] है कि आखिर इस महामारी से [illegible] महामारी से जूझ रहे लोगों पर मानसिक दबाव बहुत बढ़ रहा है।

मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने दुनिया भर में 3.0 से ज्यादा [illegible] कहा, "महामारी मानसिक [illegible] चाहिए" [illegible] कोविड–19 महामारी ने बच्चों और [illegible] हुआ है।

[illegible] महामारी कोविड–19 के दौर में दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य [illegible] है। [illegible] आवश्यक है कि [illegible] मानसिक रोगों के साथ [illegible] स्वास्थ्य पहल के लिए एक

निश्चित आय की व्यवस्था कर दिया जाए। किसी भी महामारी का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि महामारी केवल मानव शरीर को प्रभावित नहीं करती बल्कि सदियों के लिए मानव मन व स्वभाव पर अपनी गहरी छाप छोड़ जाती है। यदि सही समय पर इसका हल नहीं ढूंढा जाए तो यह मानसिक रोग का रूप धारण कर लेती है। अतः समाज और सरकार को वर्तमान कोरोनावायरस (कोविड–19) महामारी के दौरान बिगड़ते मानसिक स्वास्थ्य के प्रति और भी अधिक सतर्क रहने और इसका पुख्ता हल खोजने की आवश्यकता है ताकि भारत में मानसिक स्वास्थ्य की समस्या महामारी का रूप धारण न कर सके।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची–**


11. जागरण समाचार पत्रिका, अप्रेल 2020।
12. आजतक, स्टोरी, मई 2020।
13. अमर उजाला, 1 अप्रेल 2020।
14. दैनिक भास्कर, सम्पादकीय, 12 अगस्त 2020।



सहायक प्राध्यापक (बी०एड०)
चन्द्रावती तिवारी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
काशीपुर, (ऊधम सिंह नगर) उत्तराखण्ड
Email- chanchalkunal89@gmail.com


●

Dr. Maya Joshi is currently an Assistant Professor in B.Ed. Department in L.S.M.G.P.G.College, Pithoragarh (Uttarakhand), India. She is M.A. English and holds B.Ed., M.Ed., and Ph.D. Degree in education from Kumaon University, Nainital. She has an experience of 12 years of teaching and extension activities. She has published one book, nearly 10 research paper and many articles in different journals and magazines she has presented more than 30 research paper in national and international seminars. Her subject with specialization is educational psychology and English methodology. She is member of I.A.T.E. (Indian Association of Teacher Education).

E-Mail: mayajoshi.joshi22@gmail.com

Dr. Snigdha Rawat is Assistant Professor, Department of Sociology, M. B. Govt. P. G. College, Haldwani. She holds B.Sc., M.A. (Sociology) and Ph.D degree from Kumaun University, Nainital. She has an experience of 12 years of teaching and extension activities. She has published one book, nearly 10 research papers and many articles in different journals and magazines. She has presented more than 30 research papers in various national and international conferences. She is also an assistant co-ordinator and academic counsellor at IGNOU study centre, Haldwani.

E-mail snigdha.910@gmail.com

Dr. Arun Kumar Chaturvedi is working as an Assistant Professor of Education (Department of B.Ed.) at Laxman Singh Mahar Government P.G. College, Pithoragarh, Uttrakhand, India. He hails from Chakrajai village of district Azamgarh, Uttar Pradesh. He is a triple MA in English, Hindi, and Education. He holds M.Ed., MCA, NET, and Ph.D degree from reputed institutions. He has authored 2 books and 18 books are to his credit as an Editor. His 12 research papers have been published in peer-reviewed and UGC CARE listed journals. He has successfully convened 08 National Seminar, International Seminar and International Webinar. He has participated and presented his papers in more than 70 International Seminars, National Seminars, National and Regional Workshops. He also works as an academic counsellor of IGNOU, New Delhi and UOU, Haldwani. He has been honoured with prestigious awards like SAHITYA BHUSHAN by Madhya Pradesh Siksha Samiti, Gwalior, MP on 16th Dec 2017, HINDI SEVI SAMMAN by Vishwa Hindi Manch Bharat on 7th October 2018 and SIKSHA GAURAV by Sanskar Bharti and Vishwa Hindi Manch Bharat on 10th October 2019. He has a life time membership in IATE.

Mobile 9450608657 E-mail arunchaturvedi9@gmail.com

Also available on amazon | Nikhil Publishers Agra | kindle

Publishers

Ishika BOOK DISTRIBUTORS, AGRA

Authorised Distributor

Nikhil Publishers & Distributors

37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony,
Shahganj, Agra-282010 (U.P.) India
Mobile: 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
Visit us : www.nikhilbooks.in

Covid-19 : Changing Paradigms of Education and Society

कोविड-19 : शिक्षा और समाज के बदलते प्रतिमान

ISBN : 978-93-87697-81-2

9 789387 697812

₹ 180.00 $ 10

हिन्दी समीक्षा, समालोचना एवं सम्पादन कला में दक्ष (उ.प्र.) के प्रख्यात समीक्षक डॉ. बबलू सिंह देश के ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों में एक जाना-माना हस्ताक्षर हैं, जो एम.ए. हिन्दी, बी.एड., एल.एल. बी., यू.जी.सी. नेट, पीएच.डी. तथा डी.लिट् की उपाधि से सम्मानित हैं और देश के चर्चित राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स में आपके शताधिक शोध-पत्र एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में कई लेख, समीक्षाएँ, साक्षात्कार तथा पुस्तकों में अध्याय प्रकाशित हैं। डबल ब्लाइंड पीयर रिव्यू हिन्दी इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल्स में भी आपके शोध, लेख व समीक्षाएँ अनवरत प्रकाशित हैं। वर्तमान में आप सहायक प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, [illegible] स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा (उ.प्र.) में कार्यरत हैं। आप "21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श" उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा सम्पोषित संगोष्ठी के संयोजक हैं। आपके द्वारा लिखित पुस्तकें "[illegible] का भाषावैज्ञानिक विवेचन" तथा "[illegible] और कौरवी बोलियाँ का तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक विवेचन" तथा "हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप, चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ" प्रकाशित हो चुकी हैं। आप "समाजवादी शोध-पत्रिका (अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका–त्रैमासिक)" के संपादक हैं।

आपका वर्तमान पता 1245, [illegible] कॉलोनी, निकट [illegible], हापुड़–245101 (उ.प्र.), मोबाइल : 9412619392

ई-मेल : bssingh2015@gmail.com

डॉ. हरेन्द्र कुमार ने एम.ए., नेट, तथा पी-एच.डी. [illegible] विषय में उत्तीर्ण की। वर्तमान में आप सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र तथा समन्वयक मानव [illegible] अनुसंधान निदेशक, एस.एस.डब्ल्यू. के रूप में जे.एस. हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा (उ.प्र.) में कार्यरत हैं। आप "21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श" उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा सम्पोषित संगोष्ठी के समन्वयक हैं। आप समय आगम शोध पत्रिका (ISSN [illegible]) (अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, अर्धवार्षिक) तथा समय [illegible] पत्रिका (ISBN [illegible]) के सह-सम्पादक हैं। आप साप्ताहिक [illegible] समय आगम (Regd. No. 34354 / 24 / 2005 टी.सी.) के [illegible] के रूप में कार्य कर रहे हैं एवं आपके 18 शोध व लेख अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की [illegible] पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

आपका वर्तमान पता फ्लैट नं. डी.805, [illegible], दिल्ली रोड, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), मुरादाबाद–244102, मोबाइल : 8899410001

ई-मेल : harendra.kmr12@gmail.com

ISBN 978-93-[illegible]

[illegible] पब्लिकेशन्स
[illegible] दिल्ली-110024

# 21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श

डॉ. बबलू सिंह
प्रधान सम्पादक

डॉ. हरेन्द्र कुमार
मुख्य सम्पादक

# 21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्पोषित

# 21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श

डॉ. बबलू सिंह
प्रधान सम्पादक
संयोजक – राष्ट्रीय संगोष्ठी
असि.प्रो. हिन्दी विभाग

डॉ. हरेन्द्र कुमार
मुख्य सम्पादक
समन्वयक – राष्ट्रीय संगोष्ठी
असि. प्रो. एवं विभागाध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग




[illegible] एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश
[illegible] (उ.प्र.)

# 21वीं सदी
# और साहित्यिक विमर्श


संरक्षक/प्राचार्य

**डॉ. वी. वी. बरतरिया**

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

प्रधान सम्पादक

**डॉ. बबलू सिंह**

सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

मुख्य सम्पादक

**डॉ. हरेन्द्र कुमार**

सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

सह-संपादक

**डॉ. मन मोहन सिंह**

सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

**श्री सुरेन्द्रपाल सिंह**

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,

दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 09990236819

ईमेलः jtspublications@gmail.com

जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज, अमरोहा।
47. स्त्री विमर्श 310
डॉ. पूनम वर्मा, समाजशास्त्र विभाग कालेज,
जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज, अमरोहा।
डॉ. सीमा रानी, समाजशास्त्र विभाग कालेज,
जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज, अमरोहा।
48. ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य में दलित चेतना 315
डॉ. अजय कुमार, अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
महामाया राजकीय महाविद्यालय, कौशाम्बी (उ.प्र.)
49. प्रवासी हिंदी गज़ल में अभिव्यक्त संवेदना के विविध आयाम 322
सुनील कुमार, शोध छात्र, हिन्दी, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड,
विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)।
50. डॉ0 सुरेन्द्र वर्मा के नाट्य साहित्य में परम्परागत एवं आधुनिकता के
अभिनय का भारतीय दर्पण 331
सुनीता पाठक, शोधार्थी
51. 21 वीं सदी के उपन्यासों में अलगावबोध: बदलते भारतीय
राजनीतिक संदर्भ में 335
दीक्षा मेहरा, अनुसन्धित्सु (हिन्दी विभाग),
कुमाऊँ विश्विद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड।
52. हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का स्वरूप 339
जसवन्त सिंह, शोधार्थी हिन्दी, एम.जे.पी.आर.यू. (बरेली)।
53. किन्नर विमर्श के यथार्थ को स्वर देती लम्बी कहानियाँ 345
प्रीति चौहान, शोध छात्र, जनता वैदिक कॉलिज, बड़ौत (बागपत)।
डॉ0 साधना तोमर, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
जनता वैदिक कॉलिज, बड़ौत (बागपत)।
54. नारी तेरे रूप अनेक 351
डॉ.फ़ैज़ान अहमद, एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान),
जी.बी.पन्त (पी.जी.) कालेज, कछला (बदायूँ)।
55. मंजुल भगत का कथा-साहित्य : स्त्री जीवन का बहुआयामी यथार्थ357
अनीता वर्मा, शोध छात्र, (हिन्दी), आगरा कॉलेज, आगरा।
56. स्त्री विमर्श 363
दिलीप कुमार, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मेरठ कालेज मेरठ।
57. दलित आत्मकथाओं में अभिव्यक्त दलित जीवन की विसंगतियाँ 370
पूनम चौहान, सहायक आचार्य, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद।
58. 21 वीं सदी में ग्रामीण आर्थिक विकास में सूक्ष्मवित्त की भूमिका 376
डॉ0 प्रिया सिंह, विभागाध्यक्षा, अर्थशास्त्र विभाग,
वाई.एम.एस. डिग्री कॉलेज, मण्डी धनौरा (जे.पी.नगर)।

# 21 वीं सदी के उपन्यासों में अलगावबोधः बदलते भारतीय राजनीतिक संदर्भ में

दीक्षा मेहरा
असिस्टेन्ट (हिन्दी विभाग)
कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल उत्तराखण्ड।

उपन्यास आधुनिक मानव जीवन के समग्र कार्य व्यापारों को प्रतिबिंबित करने वाली सशक्त साहित्यिक विधा है। इक्कीसवीं सदी के भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में तीव्रता से परिवर्तन लक्षित होता है। वर्तमान समय में मनुष्य राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की जटिलता के कारण अलगाव के दंश को झेलने के लिए विवश होता जा रहा है। वैसे तो भारतीय राजनीतिक परिस्थितियां आरम्भ से ही तनावग्रस्त रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व इस्लामियों, अंग्रेजो ने यहां शासन स्थापित किया। यहां की जनता को अपने ही देश में शोषण का शिकार होना पड़ा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों ने आम व्यक्ति के जीवन में कोई सुखद भूमिक नहीं निभाई। भारत की उभरती राजनीति में लगातार प. जवाहर लाल नेहरू, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी जैसे हत्याकांड हुए। इसके साथ ही पाकिस्तान और चीन के आक्रमणों का सामना भी यहां की जनता को करना पड़ा। 1947 से 1984 तक हुए साम्प्रदायिक दंगों के बाद भी भारतीय आम जन आज भी अपने आपको मुखौटाधारी और भ्रष्ट नेताओं के बीच में फंसा हुआ पाता है। राजनीति आज एक गंदा खेल बन चुकी है। हर आदमी अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु राजनीति करता है। असगर वजाहत ने अपने उपन्यास 'कैसी आग लगाई' में राजनीतिक दल के नेताओं द्वारा जाति का फायदा उठाकर मतदान में सफल होने का चित्रण किया है– "जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष शुक्ल जी मतदान के समय अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से बात करते है कि तो जनाब... बाहर हजार कुर्मी वोट है, अठारह के करीब अहीर हैं, पासी छह हजार है..केवटो के दो गांव पड़ते हैं...ठाकुर वोट, जानी मिया ने पूछा। ठाकुर वोट पाच हजार है... नब्बू मियां ने रजिस्टर में देखकर बताया।"

भारत में 21वीं सदी की राजनीतिक विचारधाराएं अपने स्वार्थ के कारण बदलती जा रही है। अपनी सत्ता निर्माण के लिए वह ईश्वर, धर्म, जाति को शस्त्र के रूप में प्रयोग करता है। आज गरीबी हटाने के बजाय गरीब को हटाया जा रहा है। वोट की राजनीति के लिए राजनीति से अनभिज्ञ प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्तियों राजनीति में लाया जा रहा है। हेमा मालनी, रेखा, सचिन तेंदुलकर, नवजोत सिद्धु आदि अनेक ऐसे नाम है। जो जमीनी परिस्थितियों रहन–सहन आम आदमी की मूलभूत समस्याओं से नितान्त परे हैं परिणामतरू आम आदमी दाल रोटी की जुगत में सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य से अनजान आत्मकेन्द्रित हो गया है। अभावग्रस्तता और बेरोजगारी से संघर्ष करते–करते यह समाज टूटता जा रहा है। 21वीं सदी की भ्रष्ट राजनीतिक परिस्थितियां व्यक्ति को अलगाव का बोध कराने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। आज की राजनीति को भ्रष्टाचार जैसे विषैले सर्प ने अपने आगोश में जकड़ लिया है। जिसके दंश समाज के प्रत्येक क्षेत्र वर्ग

झेल रहा है। "सिंघल बाबा और विधायक जी का मानना था कि कोयलडीहा में भूमि का चुनाव उनके बिना नहीं हो सकता। इसलिए उन्हें कंपनी में शेयर मिलना चाहिए। अब बाबा और विधायक जी को सौदेबाजी का एक और मौका मिल गया था। अब इस लड़ाई को सुलझाने की प्लानिंग में साथ देने का वादा कर रहे थे। बशर्ते कंपनी शेयर वाली उनकी शर्तें मान ले। अंत में एक पांच सितारा होटल में बहुत सारी रकम पर समझौता हुआ था।" इक्कीसवीं सदी में जब राजनेता जनता की भलाई–बुराई का सौदा करने लगे तो जनता का राजनीति से मोहभंग होना ही था। नेता लोग चुनाव लड़ते समय जन सेवा, समाज सेवा, समाज सुधार, एवं गरीबी दूर करने का वचन तो देते हैं, मगर चुने जाने के बाद वे अपनी कुर्सी को संभाल कर रखने में लग जाते हैं। जन–साधारण की ज्वलन्त समस्याओं से आंखें मूंद लेते हैं। ऐसे में जन–साधारण और सत्ता के बीच अलगावीपन की खाई बढ़ने लगती है।

हमारे देश में आए दिन होने वाली जातीय–नस्लीय हिंसा या साम्प्रदायिक दंगे राजनीति के ही परिणाम हैं। धार्मिक–सामाजिक वर्चस्व के लिए राजनीतिज्ञ और धार्मिक ठेकेदार धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा, नस्ल आदि के आधार पर अन्य समुदाय को शत्रु के रूप में पेश करते हैं। उनके प्रति घृणा और भय का माहौल निर्मित करते हैं। ऐसी परिस्थितियाँ ही अलगाव को जन्म देती हैं। अलगाव का बोध तब होता है, जब व्यक्ति किसी बड़े समूह से सामाजिक, जातीय, आदिवासी, धार्मिक, नस्लीय, सरकारी या सैनिक आधार पर अलगाव की मांग करता है। अतः जब कुछ लोग देश के किसी हिस्से को उससे अलग करना चाहते हैं, तो उन्हें अलगाववादी कहा जाता है। हालांकि ऐसा जरूरी नहीं है कि वे अलग देश की ही मांग करें। कभी–कभी पूर्ण रूप से आजादी की जगह कुछ सुविधा राजनीतिक मामलों में स्वायत्तता के लिए भी यह मांग होती है। इस तरह के अलगाव का उदाहरण भारत में खालिस्तान और कश्मीर की मांग है। खालिस्तान आंदोलन एक अलगाववादी आंदोलन है, क्योंकि इसके अनुयायी इस मुद्दे पर भारत से अलग होने की मांग करते हैं कि वे अलग धर्म का पालन करते हैं। यह आंदोलन [illegible] के दशक में भारत में उभरा और इसे विदेशों में रहने वाले सिक्खों से भी वित्तीय सहायता और समर्थन प्राप्त हुआ। भारत में अलगाववाद का दूसरा सबसे बड़ा उदाहरण कश्मीर का है। राजनीतिक स्वार्थ के लिए देश को विभाजित करने का लक्ष्य लेकर उभरे इस आन्दोलन में जब नेताओं की बातचीत दूरभाष से सुनी गई, तो यह खुलासा [illegible] था। दूरभाष से हुई बातचीत से पता चलता है कि वे खुद अपने कश्मीरी भाइयों की मौत चाहते हैं ताकि ये मामला गर्म बना रहे और वे देश को तोड़ने की साजिश में सफल हो सकें।

अलगाववादी समूह पहचान की राजनीति करते हैं। उनकी सोच कुछ चुनिंदा सामाजिक समूहों के सदस्यों पर किए गए अन्याय के साझा अनुभवों पर आधारित होती है। ऐसे समूहों का मानना है कि प्रमुख समूहों के साथ एकीकरण से उनकी पहचान और आत्मनिर्णय को आगे बढ़ाने की क्षमता घट जाएगी। हालांकि, ऐसा देखा गया है कि अलगाववादी समूह उभर तभी सकते हैं जब उन्हें उनके ही देश में आर्थिक और राजनीतिक रूप से बहिष्कार झेलना पड़ता है। इसका सबसे उदाहरण [illegible] उपन्यास में [illegible] मिलता है– "जातियों और मुद्दों की बात से कुछ [illegible]



और [illegible] स्टेडियम की दीवार [illegible] की सड़क पर उतर आए। भूख से पगलाई जनता ने [illegible] अधिकारियों की दुकानों में आग लगा दी।" यह एक सामूहिक अलगाव की धारणा है, जिसमें कुछ व्यक्ति जो एक समूह, समाज, संस्कृति व धर्म को तोड़ने का समर्थन करता है, उन्हें हम अलगाववादी कहते हैं।

व्यक्ति अलगाव की स्थिति इससे भिन्न है। इस संदर्भ में डॉ. सुरेन्द्र मोहन खोसला का कथन समीचीन है– "अकेलापन समाज से सम्पर्क विहीन होने की स्थिति है। यह इसी रूप में न समझे जाने की पीड़ा से उद्भूत अलगाव संबंधी भाव है। समाज में रहता हुआ व्यक्ति स्वयं को समाज में अकेला पड़ गया अनुभव करता है। अथवा अकेला रहना उसको पसन्द आ जाता है। इस प्रकार अकेलेपन के दो रूप हैं– परिस्थितिजन्य अकेलापन एवं स्वभावगत अकेलापन। परिस्थितिजन्य अकेलापन व्यक्ति की विवशता है, जबकि स्वभावगत अकेलापन उसका चयन।" वर्तमान समय राजनीति में सबसे बुरा [illegible] माना जा सकता है। क्योंकि राजनेता अपने अस्तित्व के लिए हमेशा सत्ता का ही जाप करने लगे हैं। जनता की भलाई तो वे पहले ही छोड़ चुके हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए वे किसी से भी मिल जुलकर काम करने को तैयार होते हैं। 'जंगल जहां से शुरू होता है' उपन्यास में ऐसा ही एक संदर्भ देखने को मिलता है– "राम राजगीर और उनके साथी [illegible] पहले ही जीप में घूमकर आये थे। एक बड़ा–सा हरे रंग का प्लास्टिक बिछा है। अलग–अलग मुद्दों के बीच में हैं परशुराम। हम तो आपसे मिलने की बात सोच रहे थे कि भगवान ने आपको खुद ही हमारे पास भेज दिया। और अब बताइए [illegible] जी, हमारा ई कहना है कि हम बैकवर्ड तू बैकवर्ड। बैकवर्ड का साथ नहीं देगा तो [illegible] देगा' [illegible] राम राजगीर [illegible] ... ओपरेशन का इलेक्शन में तुम [illegible] पांडे की मदद मत करो, [illegible] है। हमारा कंडीडेट बैकवर्ड है, उसको जिताओ। [illegible] का वोट बैंक एक ही है। पिछड़ी जातियों के... अरे हम सब बुझते हैं नेताजी, [illegible] के मन में ई बात जम गई है कि 'पी.पी.' अहीर लोगन की पार्टी है। एही से कोई बैकवर्ड भाई टिकट के लिया जा रहा है, कोई कुर्मी। ई हम जानते हैं। [illegible] कुर्मी लोगन की पार्टी में [illegible] बैकवर्ड है।" इस अविश्वासपूर्ण समय की जिसके भीतर धर्म के आधार पर मानव और मानव के बीच विभेद को नकार दिये जाने की साजिशें होने लगीं। ऐसी ही साजिशों का नतीजा है कि अयोध्या की बाबरी मस्जिद के विध्वंस से मुस्लिम बस्तियों के लोगों के मन में भय, असुरक्षा, अलगाव, बेबसी और पलायन के भाव घर कर गए हैं। साम्प्रदायिक हिंसा कमजोर और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए हमेशा ही भारी क्षति का कारण बनता है। पाश्चात्य विद्वान सिमन ने 'आन द मीनिंग आफ एलिनेशन' नामक अपने लेख में लिखा है कि अलगाव के मूल में 'असमर्थता व विवशता की भावना है, जिसमें क्रमशः सामाजिक जीवन की अर्थहीनता व आदर्शहीनता उजागर होती है और मूल्य का खोखलापन का अनुभव होता है, जो धीरे-धीरे सामाजिक जीवन की उदासीनता और अलगाव में बदलकर व्यक्ति के जीवन को एकाकीपन और अजनबीपन की भावना से भर देता है।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी उपन्यासों में 21 वीं सदी के बदलते राजनीतिक परिदृश्य का सफल चित्रण हुआ है। उपन्यासों में भारतीय राजनीतिक [illegible], राजनीतिज्ञों में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्वार्थपूर्ति, चुनाव, वोट और कुर्सी की

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]


❑❑❑

## डॉ. अनुरुद्ध बाघन



जन्म- 26 दिसम्बर 1972। असम के बरपेटा जिले के बड़ारी गांव में जन्मे डॉ. अनुरुद्ध बाघन ने बी.ए. प्राग्ज्योतिष कॉलेज (गुवाहाटी) तथा एम. ए. हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय से पूरी की। उन्होंने एम.फिल. (विनायक विश्वविद्यालय, सालेम) तथा पीएच.डी. (बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर) की डिग्री भी ली। सम्प्रति आप हिंदी विभाग, मध्य कामरूप कॉलेज (डोभा, बरपेटा, असम) के विभागाध्यक्ष हैं। डॉ. बाघन ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए लेखन कार्य किया। आपकी संपादित पुस्तकों में 'रामधारी सिंह दिनकर की उर्वशी का सौन्दर्य शास्त्रीय अनुशीलन', 'भारतीय लोक जीवन: एक अध्ययन', 'लोकपरंपरा और भारतीय संस्कृति' आदि प्रमुख हैं।

स्थायी निवास- नलियाहाटी, बी.सी. लेन, बरपेटा (असम)।

## पुष्पा कुमारी

बिहार के सीतामढ़ी जिला में 10 अप्रैल 1990 को जन्मी पुष्पा कुमारी ने अपनी प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा दिल्ली से ही पूरी की है। आपने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से बी.ए. और जामिया मिल्लिया इस्लामिया से एम. ए. किया है। वर्तमान में आप गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में एम.फिल. हिंदी साहित्य की शोधार्थी हैं। आपने अजीम प्रेमजी फाउंडेशन (राजस्थान) में टीचर एजुकेटर (कैंपस एसोसिएट) के रूप में कार्य किया है। आपकी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित हुई हैं। आपकी दो संपादित पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई हैं। आप शोधसंवाद-रिसर्चफोरम (संस्था) की संस्थापक सदस्या होने के साथ वहां एकेडमिक सचिव के रूप में कार्य भी कर रही हैं। आप 'एकेडमिक जगत' (द्विभाषी मासिक पत्रिका) से सह-सम्पादक के रूप में जुड़ी हुई हैं।

स्थायी निवास- मुनिरका, नई दिल्ली।

₹650.00

एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क
शकरपुर, दिल्ली-110092

साहित्य संस्कृति का नया दौर

सम्पादक: डॉ. जाहिदुल दीवान
डॉ. अनुरुद्ध बाघन
पुष्पा कुमारी

# साहित्य संस्कृति का नया दौर

सम्पादक

ISBN: 978-81-945451-3-2
प्रकाशक : एकेडनिक पब्लिशिंग नेटवर्क
16–ए, मंडावली/फजलपुर
मंडावली, दिल्ली–110092

शाखा: कयाकुछि, बरपेटा, असम– 781352
संस्करण : 2020
मूल्य: ₹ 650
© प्रकाशक
आवरण : जितेन्द्र पुरी
कम्प्यूटर कम्पोजिंग : शिव शक्ति इंटरप्राइजेज
नई दिल्ली–110016
मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली–110002
मोबा. : 7678245992, 9667062977
ई–मेल: apnetwork18@gmail.com
वेबसाइट: https://academicpublish.in/

**Sahitya Sanskriti Ka Naya Daur**
Book Ed. by Dr. Jahidul Dewan, Dr. Anuruddha Bayan,
Pushpa Kumari
For Madhya Kamrup College and Shodhsamvad-Research
Forum published by Academic Publishing Network

| | | |
|---|---|---|
| 15. साहित्यिक अभिव्यक्ति के नये माध्यम | सरस्वती कुमारी | 120 |
| 16. साहित्यिक विमर्श के नवीनतम माध्यम | डॉ. मधु वर्मा | 125 |
| 17. डिजिटल साहित्यिक गतिविधि | रागिनी मल्लिक | 129 |
| 18. ऑनलाइन शिक्षा | डॉ. ख्याति पुरोहित | 139 |
| 19. भारत में उभरते विमर्श | डॉ. कीर्ति पन्त | 145 |
| 20. ऑन–लाइन शिक्षा की नुकसान | डॉ. शीतल | 152 |
| 21. समकालीन चिंतन की नयी दिशाएं | संदीप कुमार | 159 |
| 22. विज्ञापन युग में पत्रकारिता | आनन्द प्रकाश सिंह | 164 |

# भारत में उभरते विमर्श

डॉ. कीर्ति पन्त
प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
चन्द्रावती तिवारी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उधम सिंह नगर

आज संपूर्ण विश्व 'कोरोना' रूपी दैत्य के चंगुल में फँसा हुआ है, कोरोना एक एसा वायरस है, जिसने संपूर्ण विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में बद् से बद्तर हालात पैदा कर दिये हैं। कोरोना एक एसा वायरस जो विश्व के 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। वैज्ञानिकों के अनुसार कोरोना वायरस मानव बाल से भी 900 ग्राम छोटा एवं प्रभावी वायरस है। विश्व स्वास्थ संगठन ने इसके घातक परिणाम एवं संक्रमण को देखते हुए इसे महामारी घोषित कर दिया है। इसके संक्रमण से जुकाम से लेकर भवास लेने में तकलीफ जैसी समस्या होती है। अंत में यह बीमारी जानलेवा हो जाती है। इस वायरस से बड़े–बड़े वैज्ञानिक भी अभी तक हार गये हैं। इस वायरस की बीमारी से बचाव के लिए अद्यतन कोई वैक्सीन नहीं बन पाई है। इस बीमारी से बचाव का एकमात्र उपाय सामाजिक दूरी है।

कोरोना महामारी की शुरूवात चीन के वुहान शहर से दिसम्बर 2019 से हुई। भारत में कोरोना महामारी की आहट से भयभीत सरकार ने 24 मार्च को 21 दिनों के लिए पूरे भारत वर्ष को लॉकडाउन में (तालाबन्दी) रहने का आदेश दिया। तालाबन्दी से आशय मनुष्य अपने घरों में कैद हो गए। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के अतिरिक्त जनता कर्फ्यू लगा दिया। और 24 मार्च से पाँच चरणों में यह लॉकडाउन भी अपने रूप बदलता रहा। किन्तु अनेक उपायों के बावजूद भी कोरोना महामारी के संक्रमण में शिथिलता नहीं आई। **"विश्व में 72.91 लाख से अधिक लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके है और 20 लाख से अधिक लोग कालकवलित हो चुके हैं।"**[1]

इन तीन माह की तालाबन्दी ने सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों को प्रभावित किया। जिन्दगी की रफ़्तार थम सी गई। सामाजिक जीवन में इस लॉकडाउन की अवधि में विभिन्न विमर्श उभरकर आये, जिनको नजर अंदाज न करते हुए उनका बारीकी से अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है, विमर्श से अभिप्राय किसी न किसी प्रकार की वार्ता या विचार विवेचन से है, किन्तु साहित्य के संदर्भ में विमर्श शब्द का अर्थ किसी गंभीर विषय का गहन अध्ययन चिंतन, विश्लेशण और तर्कपूर्ण लिए गये निर्णय से हैं। सुधीर पचौरी

के अनुसार—"स्त्रियाँ सिर्फ भावनात्मक तथा बौद्धिक न रहें वह अपना मुकाम [illegible] की सीढ़ी तक जायें।" क्योंकि [illegible] स्त्रियों को [illegible] के लिए उनकी [illegible] शिक्षा [illegible] की यह तक पहुँचाना अति आवश्यक है।

कोरोना काल में यदि नारी वर्ग की चर्चा की जाए तो नारी भी बहुत हद तक इससे प्रभावित हुई है। नारी समाज की [illegible] है, अतः कवि वाल्मीकि ने कहा है—

'पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने
पुत्रो रक्षति वार्धक्ये न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति'

किन्तु आज की स्त्री परतन्त्र नहीं है। उसकी स्थिति में बदलाव आया है। आज की स्त्री जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समाज, राजनीति, औद्योगिक जगत, खेल जगत, बैंकिंग सेक्टर, प्रशासनिक सभी में अपना परचम लहरा रही है, किन्तु ऐसी स्त्रियों का प्रतिशत अल्प ही है। जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में बराबरी की भूमिका निभाती हुई स्त्री को समाज में आज भी दोयम दर्जा ही प्राप्त है। मानसिक रूप से वह पुरुष की दासी ही रहती है। आज स्त्री आर्थिक मजबूती लाने में सक्षम भले ही हो गई है, किन्तु उस पर घर की जिम्मेदारियाँ पूर्ववत् बनी हुई है। अपनी भूमिका का सफल निर्वाह न करने पर वह परिवार और समाज दोनों में ही सम्मान की हकदार नहीं होती है। किन्तु **"नारी को पुरुष की सहयोगी बनना है प्रतियोगी नहीं, अधिकारों का अर्जन ही वह लक्ष्य है जिसके लिए हमें अपने आप से और अपने से बाहर के मोर्चों पर दोहरा संघर्ष करना होगा।"**

कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन की अवधि में स्त्री का दायित्व दोहरा हो गया है। कामकाजी महिलाओं के लिए शुरूआती दौर तो कुछ हद तक विश्राम देने वाला था, किन्तु जैसे–जैसे शिक्षा, एवं अन्य कार्यालय में 'वर्क फ्रॉम होम' का प्रचलन हुआ, स्त्री का कार्य भार भी दोगुना हो गया। जो स्त्री घर के कामकाज निपटा कर कार्यक्षेत्र में कार्य करने घर से बाहर निकलती थी, और कुछ समय अपने सहकर्मियों के साथ समय व्यतीत करती थी, वही स्त्री परिवार के सदस्यों की नित्य नवीन भोजन की फरमाइशों की पूर्ति करने लगी। यद्यपि सभी परिवारों में यह स्थिति नहीं होती तथापि अधिकांश परिवारों में यह स्थिति देखने को मिलती। किन्तु अपने स्वाभाविक गुणों के कारण स्त्री उस पर भी संतोष व्यक्त करती रही। कहीं–कहीं पर स्त्रियों ने इस अवधि में डॉक्टर, नर्स, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री, पुलिस समाजसेवी के रूप योद्धा की भाँति रात दिन अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किन्तु खेद का विषय यह रहा क्वारंटाइन श्रेणी में, महिला होने का दंश भी उन्हें

झेलना पड़ा। [illegible]

[illegible]

[illegible] पड़ी।

मजदूरों की यह स्थिति [illegible] पड़ा था। [illegible] फैक्टरी का ऐलान भी कर रही है। किन्तु यह समस्या तभी दूर हो सकती है जबकि मजदूर को वास्तव में इसका लाभ मिले।

कोरोना काल में सबसे अधिक विमर्श करने योग्य वर्ग है, युवा वर्ग। यह एक ऐसा वर्ग जो बेरोजगार बैठा हुआ है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है, किन्तु परीक्षाएं स्थगित हो गई है, और देश की निरन्तर डूबती अर्थव्यवस्था उनके भविष्य के स्वप्नों को पूर्ण करने में पूर्णत: अक्षम सी दिखाई दे रही है। देश में जारी लॉकडाउन के बीच बड़ी संख्या में युवा बेरोजगार हुए हैं सेंटर फॉर मॉनीटियरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) ने बताया कि "देश में 20 से 30 साल आयु वर्ग के 2 करोड़ 70 लाख युवाओं को अप्रैल में नौकरी से हाथ धोना पड़ा.....पचास दिनों के लॉकडाउन के बीच देश की कई कंपनियों और बिजनेस को घाटा हुआ। डाटा के अनुसार नौकरी खोने वाले 11 फीसदी लोग 20–24 वर्श की आयु के युवा थे, इसमें 2019–20 में कुल रोजगार पाने वाले लोगों का यह 8.5 फीसदी 2019–20 में 3 करोड़ 42 लाख युवा पुरूष और महिलाओं को रोजगार हासिल था। अप्रैल 2020 में इनकी संख्या घटकर 2 करोड़ 9 हजार रह गई।"[4] उक्त आकड़ों से इन बेरोजगार युवओं की मनोदशा वास्तव में शोचनीय है। लॉकडाउन की इस अवधि में नशे में लिप्त नवयुवक युवतियाँ जो अपने परिवार से दूर रहकर स्वतंत्र जीवन जीने के आदि हो गये थे। तालाबन्दी के कारण इन शौकों की पूर्ति न होने के कारण अवसाद ग्रस्त हो गये। यहाँ तक कि आत्महत्या करने पर भी उतारू होने लगे। दूसरी ओर इस तालाबन्दी का सकारात्मक पहलू यह था कि जो अपने परिवार से विवशता वश दूर हो गये थे। उनकी वापसी से पारिवारिक संबन्धों में मजबूती आयी। परन्तु जीविका प्रश्न उनके जीवन में कहीं न कहीं हताशा और नैराश्य पैदा करने वाला था।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के 'डिप्रेस्ड' क्लास का हिन्दी पर्याय दलित शब्द जो वर्तमान में राजनीतिक आंदोलन एवं साहित्य से जुड़कर एक विशिष्ट अर्थ का द्योतक है। दलित से अभिप्राय–"दलित वह है जिस पर अस्पृष्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है। जिसे स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर गैर अछूतों ने सामाजिक निर्योग्ताओं की संहिता लागू की, वही और केवल वही दलित हैं और इसके अन्तर्गत वही जातियां आती हैं जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है।"[5]

इस लॉकडाउन की अवधि में दलित विमर्श भी देखने को मिला जो प्रवासी कोरोना संक्रमण से संक्रमित क्वारंटाइन केन्द्रों में रखे गये वहाँ उँच–नीच का भेद पनपा। कई स्थानों पर निम्न जाति के हाथ का बना भोजन न करने की समस्या दिखाई दी एवं अल्पसंख्यकों के साथ सामंजस्य न होने



के मामले प्रकाश में आये। क्वारंटीन केन्द्रों में जिम्मेदार डॉक्टरों पुलिस कर्मियों के प्रति हिंसात्मक रवैया अपनाया गया। अत: लॉकडाउन अवधि में जाति भेद और वर्ग भेद से पनपी समस्याओं को दूर करने के लिए विचार विमर्श आवश्यक है।

कोरोना काल में यदि कहीं परिवर्तन का नया रूप दिखाई दिया तो वह है, ललित कलाएँ। ललित कला के अंतर्गत आने वाली सभी विधाओं ने अपनी अभिव्यक्ति के स्वरूप बदले साहित्य के संदर्भ में कहा भी गया है–"साहित्य मानव मन की अभिव्यक्ति एक विशिष्ट संपत्ति होती है। जिसमें समाज का प्रतिबिंब उभरता है। समाज और राष्ट्र नष्ट हो सकते हैं किन्तु साहित्य चिर स्थायी रहता है। साहित्य के साधक साहित्य के उद्यान को अपनी मधुर भावना से सींचते हैं। उसके आधार भूत भास्वत मूल्यों की मधुर गंध से मानव का मन सदा प्रफुल्लित रहता है।"[6]

साहित्यकारों ने डिजिटल दुनिया में कदम रखा। आए दिन फेसबुक, जूम, यूट्यूब, व्हाट्सैप आदि के माध्यम से नित्य नये सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। कवियों ने जनता को इस समय बहुत अधिक मनोरंजन प्रदान किया और कोरोना विषय से जुड़े विषयों को नूतन अभिव्यक्ति प्रदान कर मानव मन के अवसाद को दूर कर उर्जा का संचार किया। चित्रकला प्रतियोगिता संगीत, प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, लेखन प्रतियोगिता आदि के आयोजन से मानव के हर वर्ग को जोड़ने का प्रयास किया है। यद्यपि इसमें गुणवत्ता में तो कमी आई है, जो लोग तकनीकी ज्ञान में कुशल थे निसंकोच आगे बढ़ रहे हैं। किन्तु जो तकनीकी ज्ञान में अकुशल हैं उनकी प्रतिभाएँ कुंठित हो रही हैं। यद्यपि लॉकडाउन की अवधि में बुजुर्ग से बुजुर्गों ने डिजिटल माध्यमों से जुड़ने का प्रयास किया है। यह कहना अति उक्ति नहीं होगी, कि अगर कोरोना के प्रभाव को किसी ने मात दी है तो वह है डिजिटल दुनिया। जिसने जीवन की रफ्तार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कम्प्यूटर नैटवर्किंग के क्षेत्र में ऐसे विकसित एप संज्ञान में आये जिससे शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन आया। ऑनलाईन कक्षाएँ संचालित की गई। जिससे कुछ हद तक समय का सदुपयोग हुआ और ज्ञान में वृद्धि हुई, किन्तु कहीं–कहीं पर इन्टरनेट की सुविधा न होने पर छात्रों को इस लाभ से वंचित होना पड़ा। शिक्षा के क्षेत्र के अतिरिक्त इन ऐपों द्वारा सामाजिक दूरी के चलते सामाजिक संबन्ध स्थिर रहे। अपने रिश्तेदार मित्रों से संबन्धों को जीवन्त और पुर्नजीवित करने का एक मात्र जरिया इंटरनेट ही रहा। डिजिटल माध्यमों का योग, स्वास्थ और व्यंजनों की जानकारी के लिए भी भरपूर प्रयोग किया गया।

पढ़ाई में यद्यपि इनके प्रयोगाधिक्य से कम आयु के बच्चों पर कक्षा कार्य और गृह कार्य के अधिभार से नेत्रों की रोशनी प्रभावित हुई। जिस समय में बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास व ऊर्जा का संचरण होना चाहिए था। यह समय बच्चों का ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन के कारण मोबाइल तक सिमट कर रह गया।

कोरोना काल में जनमानस का झुकाव पुनः अपनी संस्कृति की ओर बढ़ा। पाश्चात्य के अंधानुकरण के कारण निरंतर पतित हो रही संस्कृति को पुर्नस्थापित करने के लिए टीवी में रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण एवं जय कृष्णा जैसे धार्मिक धारावाहिक कार्यक्रमों का प्रसारण हुआ, जिससे दोनों पीढ़ी एक साथ बैठकर देखे व अनुकरणीय आदर्शों को आत्मसात् कर सके।

लॉकडाउन काल में सत्ता के चौथे स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता और मीडिया की भूमिका सर्वाधिक रही। कोरोना से संबंधित समस्त तथ्यों की जानकारी देकर मानव को कोरोना संक्रमण के प्रति जागरूक करने में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है। पत्रकारों और मीडिया कर्मियों को कोरोना योद्धा का नाम दिया गया, किन्तु जहां एक ओर स्वस्थ और पारदर्शी मीडिया ने अपना प्रभाव छोड़ा, वहीं कुछ चैनल एवं समाचार पत्र राजनीतिक भावना से प्रेरित दिखाई दिए। जिसने मानवीय संबन्धों में भेदभाव और वैमनस्य का जहर घोला।

लॉकडाउन के इस काल में यद्यपि सम्पूर्ण क्षेत्रों के विकास की गति में ह्रास दिखाई दिया किन्तु प्रकृति के लिए यह वरदान सिद्ध हुआ। आंकडो के अनुसार इन 60 दिनों में पर्यावरण शुद्ध हुआ। विगत वर्षों में अनियन्त्रित विकास की गति ने पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ दिया था, वाहनों औद्योगिक इकाइयों विद्युत उपकरणों कचरे आदि को जलाने से जो वायुमण्डल दूषित हुआ था जिसके लिए कई मुहिम चलायी गई थी देश में लॉकडाउन के परिणामस्वरूप वायु की गुणवत्ता बढ़ी, नदियों का जल स्वच्छ, ध्वनि प्रदूषण का स्तर न्यूनतम व तापमान में गिरावट आई। प्रकृति अपने पुरातन स्वरूप में निखर कर आई, धूमिल आकाश पुनः स्वच्छ दिखाई देने लगा। अतः पर्यावरण का यह सकारात्मक रूप किसी चमत्कार से कम नहीं है।

आवश्यकता है इस पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए ठोस कदम उठाने होगें वाहनों की संख्या कम करनी होगी। औद्योगिक इकाइयों पर सख्ती बरतनी होगी, मानव को व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा, वृक्षों का कटान रोकना होगा, सरकार को प्रतिवर्श पन्द्रह या बीस दिन का हानि लाभ का विचार किये बिना सुनियोजित लॉकडाउन करना चाहिए।

कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन ने मानव जाति को हिला कर रख दिया,आर्थिक और सामाजिक ढाँचा विकृत हो गया। शासन सत्ता को कोरोना ने किंर्कतव्यविमूढ़ कर दिया, शिक्षा, रोजगार, कृषि,पर्यटन आदि क्षेत्रों में जो स्थिरता आई है उसे पटरी में लाने में कई वर्शों तक संघर्ष करने पडेगें। इस कोरोना काल में आयी विविध चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार को विशेषज्ञों की उच्च स्तरीय कमेटी का गठन करना होगा, आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं समस्याओं के निराकरण हेतु बन्द कमरों में नीति निर्धारण न करके जड़ों तक पहुंचना होगा। प्रत्येक जनमानस से जुड़े विमर्शों पर गहनता से विचार करना होगा। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को इस चुनौती को स्वीकार करना होगा। एवं देश के विकास में अपना योगदान देना होगा।

## संदर्भ सूची


1. जनसत्ता 11 जून 2020
2. वाक् 2007, अंक–3 पृष्ठ–225
3. उमा भुयल, भारतीय नारी, अस्मिता की पहचान, पृष्ठ–25
4. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, पृष्ठ– 361
5. https//moneybhaskar.com
6. सम्पादक कवल भारती, युद्धरत आम आदमी, अंक वर्ष 1996 पृष्ठ–41
7. डॉ. सन्त कुमारी श्रीवास्तव, भारतीय संस्कृति, पृष्ठ–43

ISBN: 978-81-945451-3-2

प्रकाशक : एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क
16-ए, मंडावली / फजलपुर
मंडावली, दिल्ली–110092

शाखा: कयाकुचि, बरपेटा, असम– 781352

संस्करण : 2020

मूल्य: ₹ 650

© प्रकाशक

आवरण : जितेन्द्र पुरी

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : शिव शक्ति इंटरप्राइजेज
नई दिल्ली–110018

मुद्रक : कॉमेट प्रिंटर्स, दिल्ली–110002

मोबा. : 7578245992, 9667062977

ई-मेल : apnetwork18@gmail.com

वेबसाइट: https://academicpublish.in/

**Sahitya Sanskriti Ka Naya Daur**

Book Ed. by Dr. Jahidul Dewan, Dr. Anuruddha Bayan, Pushpa Kumari

For Madhya Kamrup College and Shodhsamvad-Research Forum published by Academic Publishing Network

## Foreword

At the very outset, warm greetings to all the academicians involved in this research publication. This collection is a fruitful outcome of the three days international webinar on Present Global Scenario of Indian Language, Literature, and Culture from 22nd to 24th June, this year, which was conducted jointly by Madhya Kamrup College, Sukha, Chenga, Barpeta, Assam and Shodhsamvad-Research Forum, New Delhi. I am privileged to be an active part of this grand webinar and consider myself fortunate enough to be able to offer a space for a great number of national and international academicians.

Besides, my happiness and excitement know no bounds when I came to know about the progress of this collection of research papers within a very short period of time. I thank all the members in the publishing committee for their commendable efforts and commitment towards this publication and congratulate them on their grand success. Even a bird's eye view on the theme of the webinar would prove its worth since it deals with the language, literature, and culture of India in the contemporary global context. All the papers selected for this publication centers around the theme of the webinar and they are academically much worthy.

I hope that this book would be a significant contribution towards creation of systematic study about language, literature, and culture of India in the contemporary global context and help the researchers widely in times to come.

**Dr. Gopesh Kumar Sarma**
Principal
Madhya Kamrup College

# भारतीय भाषा साहित्य और संस्कृति: एक अध्ययन

सम्पादक: डॉ. अनुरुद्ध बायन, नीरज शर्मा, शकीला

## नीरज शर्मा

20 अक्टूबर 1993 ई. को अलीगढ़ में जन्मी ... [illegible]

## शकीला

10 जून 1992 को ... [illegible]

₹650.00

ISBN: 978-81-945451-1-8

प्रकाशक : एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क

16–ए, मंडावली / फज़लपुर

मंडावली, दिल्ली–110092

शाखाः कयाकुछि, बरपेटा, असम– 781352

संस्करण : 2020

मूल्यः ₹ 650

© प्रकाशक

आवरण : जितेन्द्र पुरी

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : शिव शक्ति इंटरप्राइजेज

नई दिल्ली–110016

मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली–110002

मोबा : 7678245992, 9667062977

ई–मेलः apnetwork18@gmail.com

वेबसाइटः https://academicpublish.in/

**Bhartiya Bhasha Sahitya Aur Sanskriti: Ek Adhyayan**

Book Ed. By Dr. Anuruddha Bayan, Neeraj Sharma, Shakeela

For Madhya Kamrup College and Shodhsamvad-Research Forum published by Academic Publishing Network

# विषय–सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| | भूमिका | संपादक मंडली | 7 |
| 1. | सिंगापुर में भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति की स्थिति | डॉ. संध्या सिंह | 11 |
| 2. | भारत और भारतीय संस्कृति | अंशु भटनागर | 18 |
| 3. | लोक–संस्कृति और भारतीय समाज | प्रियंका कुमारी | 24 |
| 4. | हिंदी साहित्य में स्त्री–संबंधी दृष्टिकोण : एक पुनरावलोकन | दीप्ति | 29 |
| 5. | भारत की भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता | डिगेश्वर साहू | 37 |
| 6. | भारत में अलगाव बोध के विविध रूप | दीक्षा मेहरा | 43 |
| 7. | हिन्दी भाषा, साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव | डॉ. अनिता जोशी | 52 |
| 8. | साहित्य और संस्कृति का अंतर्संबंध | जगवती | 58 |
| 9. | वैश्वीकरण के दौर में भारत | जितेंद्र शर्मा | 64 |
| 10. | भारतीय भाषा, साहित्य, संस्कृति का आख्यान | कल्पना जैन | 73 |
| 11. | भाषा, समाज और संस्कृति का अन्तः सम्बन्ध | निधि तिवारी | 94 |
| 12. | पत्रकारिता और मानवीय मूल्य | संदीप कुमार शर्मा | 99 |

# भारत में अलगाव बोध के विविध रूप

दीक्षा मेहरा
शोधछात्रा
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

आज मनुष्य अपने को सभी सार्थक संबन्धों से कटा हुआ अनुभव कर रहा है। अलगाव बोध उसकी मानसिकता का एक अपरिहार्य अंग बनता जा रहा है। वह निरंतर तनाव, कुण्ठा, भय अकेलेपन में जीने के लिए विवश होता जा रहा है। वर्तमान समय में तो कोरोना महामारी की विकट परिस्थितियों के कारण समाज में पहले से व्याप्त इस अलगाव बोध ने एक गंभीर समस्या का रूप धारण कर लिया है। हालांकि भारतीय समाज में स्वतंत्रता के बाद के दशकों से ही अलगाव बोध महसूस होने लगा था। कतिपय विद्वान, मनोवैज्ञानिक अलगाव बोध का प्रयोग मनुष्य के अकेलेपन, पार्थक्य, आत्म निर्वासन, अजनबीपन, सामाजिक संबन्धों में बिखराव, एकाकीपन, परायापन, कुण्ठा, निराशा, संत्रास, विरक्ति, विमुखता, उदासीनता आदि के संदर्भों में करते आये है। लेकिन लगातार सामाजिक सम्बन्धों में बिखराव और सामाजिक जीवन से दूर भागते हुए स्वयं के अस्तित्व की खोज से उत्पन्न अलगाव की यह स्थिति पहले से ही विद्वत जनों के बीच चिंता का विषय बनी हुई थी। इस वर्ष कोरोना महामारी से उत्पन्न अराजक परिस्थितियों के कारण लगभग सभी स्वतंत्र जीवन जीने के अभिलाषी मनुष्यों को कहीं न कहीं अलगाव महसूस हुआ है। इस समय मनुष्य को केवल सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, क्षेत्रीय अलगाव ही नहीं झेलना पड़ रहा है बल्कि वह वैचारिक और मानसिक धरातल पर भी अलगाव से त्रस्त है। उदाहरण स्वरूप एक ऐसे व्यक्ति को देख सकते हैं जो स्वछंद जीवन की अभिलाषा से घर से दूर महानगर में नौकरी करने गया है। इस महामारी के चलते वह अपनी नौकरी गंवा देता है, जिस राज्य में वह अभी तक पूरे आनन्द के साथ जीवन जी रहा था, अचानक वह राज्य उसे अजनबी लगने लगता है, वहां उसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होने लगता है। वह कुछ भी करके अपने राज्य लौट आना चाहता है। अनेक कठिनाईयों के बाद जब वह अपने राज्य में कदम रखता है, तो उसके अपने लोग महामारी के भय से उसे वह अपनापन नहीं दे पाते, जिसके लिए वह अपने घर आने के लिए इतना व्याअकुल था। उसे 14 दिन का एकांतवास में रखा जाता है। फिर कहीं जाकर अपने अपने परिवार, सगे संबंधियों, मित्रों

से मिल पाता है। धीरे–धीरे उसे यहां भी घुटन होने लगती है। जिस स्वछंद जीवन का वह आदि हो गया था वह स्वतंत्रता उसे यहां किसी भी तरह नहीं मिलती। परिवार का जो लगाव उसे यहां खींच लाया था वह धीरे–धीरे वैचारिक अलगाव में बदलने लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस समय व्यक्ति कई तरह से अलगाव महसूस करने के लिए विवश हो गया है। इस महामारी को लड़ने हेतु अलगाव का प्रमुख रूप है–'देह से देह' का अलगाव। इस अलगाव के परिणामस्वरूप व्यक्ति सबसे ज्यादा अकेलेपन का शिकार हुआ है। व्यक्ति अकेलेपन के संदर्भ सुरेन्द्र मोहन खोसला लिखते हैं– "अकेलापन समाज के सम्पर्क विहीन होने की स्थिति है। यह सही रूप में न समझे जाने की पीड़ा से उद्भूत अलगाव संबन्धी भाव है। समाज में रहता हुआ व्यक्ति स्वयं को समाज में अकेला पड़ गया अनुभव करता है। अथवा अकेला रहना उसकी पसन्द बन जाता है। इस प्रकार अकेलेपन के दो रूप हैं– परिस्थितिजन्य अकेलापन एवं स्वभावगत अकेलापन। परिस्थितिजन्य अकेलापन व्यक्ति की विवशता है, जबकि स्वभावगत अकेलापन उसका चयन।"

वर्तमान समय में व्यक्ति परिस्थितिजन्य अकेलेपन का शिकार हुआ है, क्योंकि कोरोना नामक बीमारी से बचने अथवा लड़ने के लिए शारीरिक दूरी का एहतियात बरतना बेहद जरूरी है। वैश्विक महामारी कोरोना (2019–2020) की शुरूआत चीन के वुहान शहर से दिसंबर 2019 से शुरु हुई। इसे 'कोविड–19' नाम दिया गया। इस वैश्विक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व में कहर बरसाया है। इसकी विभीषिका का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अब तक 'विश्व में 72.91 लाख से अधिक लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके हैं और 20 लाख से भी अधिक लोग काल–कवलित हो चुके हैं।' भारत में भी इसका संक्रमण लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में सरकार और प्रशासन की ओर से इस महामारी को रोकने के लिए लगातार जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्री मोदी जी ने 22 मार्च को 'जनता कर्फ्यू' की अपील की। 24 मार्च की देर शाम 21 दिनों के देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की, जो पूर्ण रूप से 14 अप्रैल तक जारी रहा। इसी बीच प्रधानमंत्री जी ने 5 अप्रैल को रात 9 बजे दीप जलाने की अपील भी की। इसके पश्चात् 15 अप्रैल से 3 मई तक 19 दिन का लॉकडाउन का द्वितीय चरण प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् 4 मई से 17 मई तक तृतीय लॉकडाउन की घोषणा की गई। फिर 18 मई से 31 मई तक लॉकडाउन का चतुर्थ चरण रहा। इस बीच कोरोना वायरस के तेजी से बढ़ते मामलों के कारण आम जनता में शंका और भय गहराने लगा आम जन



बाजार से सब्जी या दूध के पैकेट को छूने तथा अन्य दैनिक उपयोग की सामग्रियों को छूने से भी डरने लगे। इस माहौल में लोगों की घबराहट बढ़ने लगी। तनाव के कारण बहुत से लोगों को नींद न आने की शिकायतें भी आने लगी। इसके साथ ही समाज में विविध प्रकार की अफवाहें भी लगातार फैलती गई। इसका असर निजी जीवन, परिवार, समाज देश और दुनिया हर स्तर पर दिखाई देने लगा। कोरोना संक्रमण को रोकने के विविध प्रयासों के बावजूद भारत में निरंतर कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ती जा रही है। 'भारत में कोरोना महामारी से संक्रमितों की संख्या 2.87 के लगभग पहुंच गई है। अब तक 8,102 लोगों की कोरोना के कारण मृत्यु हो चुकी है।'

समाज का निर्माण मनुष्य के परस्पर अत: सम्बन्धों से होता है। जब समाज में परिवर्तन होता है, तो व्यक्ति उससे अछूता नहीं रह सकता। इस वर्ष कोरोना महामारी के कारण भारतीय समाज में विविध परिवर्तन दिखाई देते हैं, इन परिवर्तनों ने समाज में धीरे–धीरे अलगाव के विविध रूपों को जन्म दिया हैं। कई वर्षों से बार–बार यह कहा जा रहा था कि सोशल मीडिया के इस दौर में लगातार डिजिटल संपर्क के बावजूद हम सब अकेले होते जा रहे हैं। हमारी वर्चुअल दुनिया हममें घर–परिवार, पास–पड़ोस की वास्तविक दुनिया से अलगाव का भाव पैदा कर रही है। जिसके कारण व्यक्ति अलगाव का दंश झेलने को विवश होता जा रहा है। एक हद तक यह बात सच भी थी, लेकिन अगर पूरी तरह सच होती तो वर्तमान समय में उभरते इस अलगाव से निपटना हमारे लिए इतना मुश्किल न होता। मोबाइल फोन और इंटरनेट की बदौलत यह वर्चुअल दुनिया आज भी हमें उपलब्ध है लेकिन उससे हमें कोई निजी राहत भी नहीं मिल पा रही है। लॉकडाउन ने हमें व्यावहारिक दृष्टि से ही नहीं मनोवैज्ञानिक तौर पर भी वास्तविक दुनिया की अहमियत का अहसास कराया है। वैसे तो अलगाव बोध हमारे लिए कोई नया भाव नहीं हैं, उसकी कई शक्लें हमने पहले से देखी हुई हैं। भले ही यह अलगाव विदेशों में जीवन यापन करने वाली संतानों के वृद्ध माता–पिता हो, या किसी व्यक्ति विशेष को गंभीर बीमारी के चलते अस्पताल के कमरे में महसूस हुआ हो, या फिर अचानक बेरोजगारी के कारण किसी को इसका बोध हुआ हो आभास हुआ हो। लेकिन वर्तमान समय में कोरोना के कारण उत्पन्न जिस अलगाव की हम बात कर रहे हैं, यह जीवित मानवीय स्मृति का सबसे अनूठा अलगाव बोध है, जिसे हर व्यक्ति अलग–अलग शक्ल में महसूस कर रहा है।

अलगाव के इन विविध रूपों का गंभीरता से अध्ययन किया जाए तो इसकी शुरूआत भारत में पारिवारिक विघटन से शुरू होती है। इसका

कारण यह है कि स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय समाज कृषि–प्रधान था और इस कृषि–प्रधान समाज में संयुक्त परिवारों का प्रचलन था। स्वातंत्र्योत्तर समाज में तीव्रता से औद्योगीकरण का विकास हुआ। संयुक्तर परिवार के सदस्य रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे। शहरों में आने के बाद व्यकक्ति को कई प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ा। निजी संघर्ष के चलते वह अपने परिवार से कटता गया। जहां एक ओर उस व्यक्ति के परिवार को अलगाव का बोध हुआ वही स्वयं वह व्यक्ति भी परिवार के अभाव में अकेलापन महसूस करने लगा। धीरे–धीर स्वतः आपसी संबन्धों की घनिष्ठता कमजोर पड़ने लगी, यही से शुरू हुआ पारिवारिक अलगाव बोध। इस वर्ष कोरोना महामारी के परिणामस्वरूप मनुष्य और मनुष्य के बीच संदेह और भय की दीवार खड़ी हुई है। न जाने किस मित्र, किस परिजन, किस रक्त संबंधी के रूप में कोरोना का आक्रमण होगा यह भय पहले से ही कमजोर पड़ चुकी पारिवारिक सामाजिक व्यवस्था को तोड़ने का कार्य कर रहा है। नगरीय समाज को तो फिर भी एकल परिवारों का अनुभव है, किंतु ग्रामीण समाजों में जहां कहीं–कहीं अब भी संयुक्त परिवार जीवित है कोरोना के द्वारा थोपे गए इस सन्देह जनित एकांत ने उनमें भी अलगाव की दरार डालना शुरू कर दिया है। आजकल आय दिन समाचार पत्रों में ऐसी खबरों की भरमार रहती है जिसमें बताया जाता है कि कोरोना के भय से एक मां अपने प्रवासी बेटे को घर की दहलीज में नहीं घुसने देती, सगी बहन अपने विकलांग भाई को आता देखकर दरवाजा बन्द कर देती है। गांव वाले अपने ही गांव वापस लौट रहे प्रवासियों का विरोध करते हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं के साथ बढ़ती घरेलू हिंसा, वैचारिक टकराव, वृद्धों से अलगाव एवं उपेक्षा के भाव की दिखाई देने लगे हैं।

औद्योगीकरण के कारण ही समाज में पूंजीवाद का जन्म हुआ था। अर्थ की महत्ता बढ़ने के कारण व्यक्ति में भौतिकतावादी चेतना विकसित हुई। धीरे–धीरे व्यक्ति अर्थ के बल पर सुखी जीवन जीने की कल्पना करने लगा। परिणामस्वरूप परम्परागत सामाजिक मूल्यों के प्रति उसकी आस्था कम होने लगी, उसे सामाजिक मर्यादाओं का पालन करने में कठिनाई महसूस होने लगी। जीवन और व्यावहारिक मूल्य सार्थकता खोने लगे। बहुत जल्दी व्यक्ति परम्परागत मूल्यों के प्रति अलगाव महसूस करने लगा। वह दौर आने में देर न लगी जब नयी पीढ़ी परम्परागत मूल्यों के प्रति अनास्था महसूस करने लगी, और पुरानी पीढ़ी परम्परागत मूल्यों के प्रति समर्पित थी। एक ओर नयी पीढ़ी ने परम्परागत मूल्यों को अस्वीकार करना शुरू किया तो दूसरी ओर पुरानी पीढ़ी ने नयी पीढ़ी पर उन्हीं मूल्यों को

अपनों से दूर नहीं किया है, हमारे पास ऐसे माध्यम उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से हम अपनों से बात कर इस वैयक्तिक अलगाव को कम कर सकते हैं। लेकिन आज हमारी वास्तविकता यह है कि हम इतनी विशाल दुनिया में किसी से जुड़ा हुआ महसूस नहीं कर रहे हैं और अकेलेपन में जी रहे हैं। ऐसा नहीं है कि दुनिया हम से नहीं जुड़ पा रही है, बल्कि हम स्वयं को दुनिया से नहीं जोड़ पा रहे हैं। हम यह चाहते हैं कि सब हमसे जुड़ जाएं। मगर किसी से जुड़ने की पहल हम नहीं करते। इस वैयक्तिक अतिशयता के कारण व्यक्तिक जीवन में विसंगति, अस्थिरता, यांत्रिकता–सी आ गई है। वह अपने को अकेला समझने लगा है। पूंजीवादी भौतिक जीवन–दृष्टि से मनुष्य की स्थिति यंत्र जैसी होती जा रही है। सुख–सुविधाओं को प्राप्त करने और समाज में अपनी एक अलग सत्ता बनाने में ही उसका संपूर्ण समय व्यतीत हो रहा है। स्थिति यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी दुनिया में विविध समस्याओं को अकेले झेलते हुए जी रहा है। इस कारण समकालीन परिवेश में अलगाव के साथ अब अजनबीपन का बोध भी होने लगा है।

अलगाव और अजनबीपन के साथ जीवन संबन्धी अनिश्चितता और भविष्य की चिंता ने व्यक्ति में तनाव और भय जाग्रत किया है। भय के आंतरिक रूप को ही साहित्य जगत में संत्रास कहा जाता है। "संत्रास विषम परिस्थितियों के मध्य संघरणशील मानव के मन की असन्तोष और भय से मिश्रित दुख मूलक मनः स्थिति है।" व्यक्ति में संत्रास बोध के अंतर्गत पीड़ा, निराशा, भय, कुण्ठाण, असन्तोष, पराजय संशय और आतंक विद्यमान होता है। अत्यधिक संत्रास से व्यक्तित्व, विघटन की संभावना बढ़ जाती है। वर्तमान समाज में संत्रास ने व्यक्तित्व को असंतुलित कर दिया है। ऐसा लगता है कि बाह्य और आंतरिक जीवन में जितना अंतर वर्तमान समय में आ गया है, शायद इससे पहले कभी इतना अंतर न रहा होगा। संत्रास की स्थिति में तीन प्रकार की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया देखी गई है– संघर्ष, पलायन एवं पराजय। आज युवा वर्ग और कोरोना महामारी के दौरान रोजगार खो चुके लोगों में जीवन के प्रति अनिश्चितता का भाव पैदा हो रहा है। इससे भी दुखद स्थिति यह है कि आज की युवा पीढ़ी में परिस्थितियों से संघर्ष के बजाय पलायन की प्रतिक्रिया अधिक दिखाई देती है क्योंकि उसके सामने न सामाजिक मूल्य हैं, न ही कोई आदर्श। पलायन स्वयं से अलगाव की एक स्थिति है, जो मृत्युबोध को जन्म देती है। लगातार यदि समाचारों पर नजर डाले तो आत्महत्या के बढ़ते मामले इसकी पुष्टि करते दिखाई हैं।

मृत्युबोध की स्थिति में मनुष्य की जीवन के प्रति आस्था खत्म हो



जाती है। भले ही समकालीन मनुष्य ने ईश्वर के अस्तित्व को पूरी तरह नकारा नहीं है, किन्तु ईश्वर के प्रति उसकी आस्था में कमी जरूर आयी है। वह अपनी बौद्धिक क्षमता को अधिक महत्व देने लगा है। अपनी सारी इच्छाओं की पूर्ति वह अपने जीवन–काल में चाहता है। इसके लिए वह निरंतर संघर्ष करता है, लेकिन वर्तमान समय में व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध जीने की संभावनाएं ही अधिक हैं। जीवन की अनिश्चितता, अत्यधिक संघर्ष एवं इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति न होने के कारण मृत्युबोध की संवेदना का विकास हुआ है। इसका एक कारण यह भी है कि व्यक्ति कुछ हद तक स्वयं से भी कट गया है।

आज के कोरोना काल में एक बार फिर साम्प्रदायिक अलगाव का बोध होता है। आज भी हमारे देश में कुछ शक्तियां ऐसी हैं, जो सदा से समुदायों के बीच दूरी एवं द्वेष पैदा करके उनमें अलगाव बढ़ाने की कोशिश करती रही हैं। इन शक्तियों ने कोरोना वायरस को भी सांप्रदायिक एजेंडे के रूप में इस्तेमाल किया है। ये शक्तियां मीडिया की मदद से कोरोना वायरस को फैलने का जिम्मेदार मुस्लिम समुदाय को ठहराने में सफल रही हैं। इस बीमारी से लड़ने के लिए शारीरिक दूरी का एहतियात बरतना जरूरी बताया गया है। इसी मौके का फायदा उठा कर इन्होंने छुआछूत और सामाजिक अलगाव को बढ़ाव देने की कोशिश की है। मुसलमानों से सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार का अभियान चलाया। इस तरह कोविड–19 के इर्दगिर्द हमें इस्लामोफोबिया जैसा खतरनाक सांप्रदायिक अलगाव भी की देखने को मिलता है। भारत में इस मुद्दे को लेकर कुत्सित राजनीति भी की गई। इस संदर्भ में स्कंदशुक्ल ने हिन्दुस्तान में छपे एक लेख में लिखा है– "विषाणु भी अपने जीवन और प्रजनन के लिए लड़ रहा है और मनुष्य भी। यह दो विरोधी अस्तित्वों के बीच का महाभारत है। मनुष्य इतना स्वार्थी है कि वह सूक्ष्म शत्रुओं को पहचानने में चूक करता है। वह इतना मूर्ख है कि वह धर्म, जाति, नस्ल, देश और लिंग के नाम पर लड़ा–भिड़ा करता है। सूक्ष्मताओं के साथ एक समस्या है, उनके साथ आप राजनीति सीधे तौर पर नहीं खेल सकते। पर राजनीति खेलना तो सबसे उन्नत टामइपास है। सो सूक्ष्म शत्रुओं के छत्र तले लोग परस्पर स्थूल शत्रुओं को जिया करते हैं। वे साझे सूक्ष्म शत्रु को ढाल बना लेते हैं और आपस में स्कोर सेटल किया करते हैं।" आज किसी जाति, नस्ल या धार्मिक समुदाय को इस बीमारी के प्रसार के लिए उत्तरदायी ठहरा कर बड़ी आसानी से उसे हिंसा का शिकार बनाया जा रहा है।

आर्थिक प्रणाली के तहत समान या सेनाओं के उचित आदान

प्रदान न होना आर्थिक अलगाव बोध को जन्म देता हैं। आर्थिक टूटन, निराशा, दिशाहीनता आदि आर्थिक अलगाव बोध के प्रमुख कारण हैं। इसमें पूंजीवादी सामाजिकव्यवस्था में श्रमिकों के मन में उपजे व्यवस्था के प्रति अलगाव की भावना निहित है। इस वर्ष कोरोना काल में मजदूरों, किसानों, अर्द्ध–पूर्ण बेरोजगारों का अनुभव आसानी से भुलाने वाला नहीं होगा। हमारे देश मेहनतकश मजदूरों की दुर्दशा का सिलसिला अभी तक थमने का नाम नहीं ले रहा है। प्रत्येक दिन भूख, जिल्लत और अपने ही देश में बेगानेपन का दंश झेलते मजदूर चारों तरफ दिखाई दे रहे हैं। असंगठित–संगठित क्षेत्र के इन मजदूरों के अलावा सीमांत किसानों की भी यही स्थीति है। ऐसे में मजदूर वर्ग का व्यवस्था के प्रति अलगाव को कैसे रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्तकोरोना काल में एक और तथ्य हमारे सामने आता है वह है– बड़ी–बड़ी सोसाइटी की चारदीवारी में रहने वाला समृद्ध वर्ग जो गरीब–विरोधी, मजदूर विरोधी है। यह वर्ग अधिकांशतरू देशभक्ति का दिखावा करता है और गरीबों के साथ दुर्व्यवहार करता है। कुछ अपवादों को छोड़कर इसे रोबर्ट राइच' समृद्धों का अलगाव'कहते हैं। इसमें अमीर कहे जाने वाले नागरिक समाज से दूर अपने निजी बंद समुदायों में सिमट जाते हैं।

इस महामारी के दौर में भारत में क्षेत्रीय स्तर पर भी अलगाव दिखाई देता है। भारत एक राज्यों का संघ केवल संविधान में लिखा हुआ शब्द नहीं है। बल्कि व्यावहारिकता में उत्तर से लेकर दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम के छोर तक के राज्यों के नागरिकों की एक–दूसरे पर निर्भरता और सहयोग को जरूरी बनाता है। इस प्रकार तमिलनाडु में रोजगार की तलाश में गया बिहार राज्य का कोई नागरिक भी अपने देश की हवा में जीता है और मणिपुर या असम से दिल्ली आकर अपनी प्रतिभा को निखारने वाला कोई भी व्यक्ति अपने राष्ट्र के विकास में योगदान करने को लालायित रहता है। लेकिन अदृश्य कोरोना वायरस में इतनी शक्ति है कि उसने एक राज्य से किसी दूसरे राज्य में गये नागरिकों को 'लावारिस' बनने पर मजबूर दिया। भारतीय संघ के किसी भी राज्य के किसी भी नागरिक के किसी भी राज्य में एक समान अधिकार होंगे और एक समान हैसियत होगी परन्तु वर्तमान समय में कोरोना से लड़ाई में यह आपसी निर्भरता व सहयोग भाव टूट रहा है और रोजी–रोटी व रोजगार की तलाश में दूसरे शहरों में बसें लोग असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। यही असुरक्षा का भाव हमें एक देश में अपने राज्य अपने क्षेत्र के प्रति लगाव वे दूसरे राज्य प्रति अलगाव का बोध करता है। कोविड–19 ने लोगों को संकीर्ण राष्ट्रवाद की ओर भी धकेला है।

हिन्दी समीक्षा, समालोचना एवं सम्पादन कला में दक्ष (उ.प्र.) के [illegible] समीक्षक डॉ. बबलू सिंह देश के ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों में [illegible] निष्णात हस्ताक्षर हैं, जो एम.ए. हिन्दी, बी.एड., एल.एल.बी., [illegible] नेट, पीएच.डी. तथा डी.लिट् की उपाधि से सम्मानित हैं और [illegible] चर्चित राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स में आपके [illegible] शोध-पत्र एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में कई लेख, [illegible] साक्षात्कार तथा पुस्तकों में अध्याय प्रकाशित हैं। डबल ब्लाइंड पीयर रिव्यू [illegible] इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल्स में भी आपके शोध, लेख व समीक्षाएँ आदि प्रकाशित हैं। वर्तमान में आप सहायक प्रोफेसर एवं शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग [illegible] स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा (उ.प्र.) में कार्यरत है। आप "21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श" उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा सम्पोषित [illegible] संयोजक है। आपके द्वारा लिखित पुस्तकें "सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की [illegible] का भाषावैज्ञानिक विवेचन" तथा "ब्रज और कौरवी बोलियों का [illegible] भाषावैज्ञानिक विवेचन" तथा "हिंदी पत्रकारिता का स्वरुपः चुनौतियाँ एवं [illegible] प्रकाशित हो चुकी है। आप 'समाजदर्शी शोध-पत्रिका (अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] पत्रिका-त्रैमासिक)' के संपादक हैं।

आपका वर्तमान पता 1245, बैंक कालोनी, निकट [illegible] हापुड़-245101, (उ.प्र.), मोबाईल : 9412619392

ई-मेल : bssingh2015@gmail.com

डॉ. हरेन्द्र कुमार ने एम.ए., नेट, तथा पी-एच.डी. (समाजशास्त्र) विषय में उत्तीर्ण की। वर्तमान में आप सहायक [illegible] विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र तथा समन्वयक मास्टर ऑफ [illegible] लघुशोध निर्देशक, एम.एस.डब्ल्यू. के रूप में जे.एस. हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा (उ.प्र.) में कार्यरत हैं। आप "21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श" उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान [illegible] सम्पोषित संगोष्ठी के समन्वयक है। आप समय आगम शोध पत्रिका (ISSN 0976-4682) (अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, अर्धवार्षिक) तथा समय [illegible] पत्रिका (ISBN 0976-4682) के सह-सम्पादक है। आप साप्ताहिक [illegible] समय आगम, (Regd. No. 34354 / 24 / 2005 टी.सी.) के प्रबन्धक [illegible] कर रहे है एवं आपके 16 शोध व लेख अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की [illegible] पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

आपका वर्तमान पता फ्लैट नं : डी.805, पार्म ग्रीन सुपरटेक, [illegible] मुरादाबाद (पाकबड़ा), मुरादाबाद-244102, मोबाईल : 8899410001

ई-मेल : harendra.kmr12@gmail.com

ISBN 978-93-[illegible]

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
डी-५०८, गली नं.१७, विजय पार्क,दिल्ली-११००५३

# 21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श

डॉ. बबलू सिंह — प्रधान सम्पादक

डॉ. हरेन्द्र कुमार — मुख्य सम्पादक

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा संपोषित

# 21वीं सदी और साहित्यिक विमर्श

डॉ. बबलू सिंह
प्रधान सम्पादक
संयोजक - राष्ट्रीय संगोष्ठी
असि.प्रो. हिन्दी विभाग

डॉ. हरेन्द्र कुमार
मुख्य सम्पादक
समन्वयक - राष्ट्रीय संगोष्ठी
असि. प्रो. एवं विभागाध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग




जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महावि[illegible]
(सम्बद्ध-एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्र
[illegible] 244221 (उ.प्र.)

# 21वीं सदी
# और साहित्यिक विमर्श


संरक्षक/प्राचार्य

**डॉ. वी. बी. बरतरिया**

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

प्रधान सम्पादक

**डॉ. बबलू सिंह**

सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

मुख्य सम्पादक

**डॉ. हरेन्द्र कुमार**

सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

सह-संपादक

**डॉ. मन मोहन सिंह**

सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)

**श्री सुरेन्द्रपाल सिंह**

जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा (उ.प्र.)



**जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स**

वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,

दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 0999023 6819

ईमेलः jtspublications@gmail.com

डॉ. मोहम्मद आरिफ, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ शिक्षा केंद्र,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

24. नारी विमर्श 179
प्रतिमा रानी, प्रवक्ता-हिन्दी, कृष्णा कॉलेज, बिजनौर।

25. स्त्री विमर्श 183
डॉ. रीतू भटनागर, असि. प्रो. हिंदी विभाग, एम.जी.एम. (पी.जी.) कॉलेज, संभल।

26. हिन्दी दलित पत्रकारिता: प्रासंगिकता का सवाल 188
डॉ. राम भरोसे, असि. प्रोफेसर (हिन्दी विभाग प्रभारी),
श.बे.चौ. राजकीय महाविद्यालय, पोखरी (क्वीली), टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

27. उदय प्रकाश की कहानियों में दलित विमर्श 203
रीतु, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कन्या गुरुकुल काँगड़ी परिसर,
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।

28. हिन्दी साहित्य आलोचना के नियामक: नामवर सिंह 210
ज्ञानमती वर्मा, शोध छात्रा, सर्वपल्ली राधाकृष्णन विश्वविद्यालय,
भोपाल।

29. हिन्दी दलित साहित्य के प्रेरक कवि : संत रविदास 217
प्रो0 (डॉ0) शिव शंकर मंडल, हिन्दी विभाग, जी.बी. कॉलेज,
नवगछिया, (ति0 मॉ0 भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर)।

30. 21 सदीं में बदलता भारतीय राजनीतिक परिदृश्य : मुद्दे एवं चुनौतियाँ 222
डॉ. रंजना, असि.प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, चन्द्रावती तिवारी कन्या स्ना.महा., काशीपुर, जिला ऊधम सिंह नगर।

31. 'छिन्नमूल' एक सामाजिक अध्ययन 225
संगीता सोलंकी, शोध छात्रा, हिंदी विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ।

32. वर्तमान परिवेश में स्त्री विमर्श का मूल्यांकन 236
डॉ0 सुनील कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
श्री शालिगराम शर्मा स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रासना, मेरठ।

33. दलित विमर्श के प्रतिमान 241
अज़ीज़ अहमद, नगर पंचायत फरीदपुर, तहसील बहेड़ी, जिला-बरेली।

34. प्रवासी साहित्यकार रामदेव धुरंधर के साहित्य में धार्मिक विचारों का निरूपण 244
सुमन फुलारा, एम.बी.पी.जी.कॉलेज, हल्द्वानी,
(कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल)

35. जलवायु परिवर्तन से निबटने को दो कदम आगे हैं हम 248
अंजूलिका, एन.के.बी.एम.जी.कॉलेज, चन्दौसी।
डॉ.कादम्बरी मिश्रा, प्रवक्ता (संस्कृत), एस.एम.कॉलेज चन्दौसी।
डॉ.आर. के. मिश्रा, पर्यावरण विभाग, के.के.एस.महाविद्यालय, नरौली (सम्भल)

# 21 सदीं में बदलता भारतीय राजनीतिक परिदृश्य : मुद्दे एवं चुनौतियाँ

डॉ. रंजना
असि.प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
चन्द्रावती तिवारी कन्या स्ना.महा.
काशीपुर, जिला ऊधम सिंह नगर।

किसी भी समाज और विशेष रूप से लोकतंत्र में नागरिकों की रक्षा के लिए ऐसे संस्थान आवश्यक हैं जो कानून का राज सुनिश्चित कर सकें। इसमें लोकतंत्र के तीन स्तम्भ–व्यवस्थापिका, कार्यपालिका औरन न्यायपालिका के साथ केन्द्रीय बैंक, जांच एजेन्सी, और सरकार के बहीखाते का ऑडिट करने वाला (कन्ट्रोलर एण्ड ऑडीटर जनरल ऑफ इंडिया) जैसी सहयोगी संस्थायें भी शामिल हैं. सच यह भी है कि इन संस्थाओं को मनुष्य चलाते हैं, जिनके हमेशा ही निष्पक्ष होने की गारंटी नहीं दी जा सकती। इसके अतिरिक्त मार्केट भी हमेशा ही सही नहीं होता और ना ही सूचनायें पूर्ण रूप से संतुलित होती हैं, उदार लोकतंत्र में सभी बडे संस्थानों को स्वतंत्र रूप से चलाया जाना जरूरी है, लेकिन लोकतंत्र इन संसथाओं से जबाबदेही की मांग भी करता है इसके लिए नीतिगत बदलाव में दो लक्ष्यों को साधना होता है– प्रथम संस्थान के कामकाज में राजनीतिक दखलंदाजी न हो और उसकी स्वायत्ता बनी रहे, दूसरे गवर्नेस सिस्टम में जबाबदेही। कुछ साल के अन्तराल पर संस्थान की स्वायत्ता और जबाबदेही की पड़ताल भी करती रहनी चाहिए। विशेष रूप में आज के डिसरप्टिव यानी भारी उथल पुथल वाले समय में यह आवश्यक हो गया है कई लोग मानते हैं कि डिसरप्शन केवल नागरिकों के लिए सामाजिक बदलाव निशानी है और सरकारी संस्थान इससे बेअसर रहते हैं लेकिन सभी सस्थाओं और उसमें नियुक्तियों से सम्बन्धित सभी विशयों में इसकी आवश्यकता है, साथ ही देश में ऐसे कई संस्थान भी हैं जिनकी ताकत उनका नेतृत्व करने वालों की निजी हैसियत से तय होती है जिसमें रिटायर्ड नौकरशाह शामिल हैं, जो कई नियामकीय संस्थाओं के प्रमुख बन जाते हैं जो कमीशन और ट्रिब्यूनल के प्रमुख बनाये जाते हैं।

21वीं सदी के भारत को नये नैरेटिव की आवश्यकता है। 3 लाख करोड़ डालर के साथ हम दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं और अगले लोकसभा चुनाव तक भारत को 5 लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा गया है। हालांकि संस्थानिक स्तर पर इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को लेकर कोई झलक नहीं दिख रही है। उदारीकरण से पहले सरकारी नियंत्रण को ध्यान में रखकर नीतियां बनाई जाती थी तब उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का दौर था, टैक्स की दरे बहुत ऊँची थी और लेबर पॉलिसी पर भी सरकारी नियंत्रण वाले विचारों की छाप थी। उदारीकरण के बाद वर्षों में नीतियां तुलनात्मक तौर पर फ्रेंडली रही हैं।

21वीं सदी के भारत को चाहिए कि आज की आवश्यकताओं को पूरी करने वाली संस्थाओं तथा समय के साथ बदले हुए संस्थाओं के रूप के आधार पर स्वयं को ढाल लें तभी भारत की आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। पिछले पांच वर्षों



में देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं को लेकरर विचारधाराओं के खूंटे में बंधी एक बहस चल रही है लेकिन इस विशय की तह तक पहुंचने के लिए विश्लेषण का प्रयास भी नहीं किया गया। इस विषय पर गंभीर चर्चा करने के बजाय अपनी–अपनी विचारधारा के आधार पर ही फेसला सुना दिया गया और इसके अन्तर्गत मुख्य तथ्यों की अनदेखी की गई और अपने निजी अनुभवों के आधार पर राय बना ली गई। लोकतांत्रिक संस्थाओं को लेकर चल रहे इस विमर्श पर निष्ठा हावी है और उसी से इस बहस की दिशा तय हो रही है अगर कोई सत्तारूढ़ सरकार का सहयोगी या समर्थक है तो उसे लगता है कि सरकार संस्थानिक ढांचे मेंपरिवर्तन करके उसकी गलतियों को दूर कर रही है। योजना आयोग की जगह लेने वाले नीति आयोग के विशय में ऐसा ही हुआ। योजना आयोग संवैधानिक संस्था थी लेकिन नीति आयोग ने उससे कहीं अधिक शक्तियां प्राप्त कर ली। दूसरी तरफ सरकार विरोधी लोगों का आरोप लगा कि यह सारे कदम संस्थाओं को बरबाद करने के लिए उठाये जा रहे हैं। यह पिछले कई दशकों से चल रहे देश के सामाजिक, राजनीतिक ध्रुवीकरण का नतीजा है जो हाल के वर्षों मेंचरम पर पहुंच गया है।

वर्तमान सरकार को संस्थानों को बरबाद करने वाले और आंकड़ों में हेराफेरी करने वाला बताया जा रहा है उसे न्यायपालिका, विपक्ष चुनाव आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक तथा विश्वविद्यालयों की तरफ से विरोध का सामना करना पड़ा वैसे सरकार इस विषय मेंसभी आरोपों का जवाब दे चुकी है, लेकिन इन संस्थाओं को लेकर इस विषय पर राजनीतिक विचार विमर्श की आवश्यकता है क्योंकि देश और नागरिकों के भविष्य के लिए यह संस्थाऐं बहुत महत्व रखती हैं इसलिए इस मुद्दे पर ईमानदार बहस के लिए संस्थानों को बनाने और उन्हें मजबूत बनाने के बुनियादी सिद्धान्तों का विश्लेषण करना होगा। जैसे सुप्रीम कोर्ट में न्यायपालिका कथित तौर पर सरकार का साथ देने का आरोप, आर.बी. आई. के कामकाज को लेकर टकराव, सीबीआई में नियुक्तियां और उसका ढांचा या रोजगार के आंकड़े जारी न करना।

वर्तमान में मोदी सरकार सत्ता में है उसे इस विषय में पहल करनी चाहिए की संस्थानों और उनके ढांचे, रिजल्ट पर पुर्नविचार करें इसके साथ ही यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि संस्थानों को बनाने का काम ऐसा चुनौतीपूर्ण होता है। जिसकी मंजिल लगातार बदलती रहती है। इसमे बदलाव की मांग और स्थिरता की आवश्यकता के बीच हमेशा द्वन्द बना रहता है, संस्थान और उसे संचालित करने वालों के बीच भी टकराव की स्थिति आती है। ऐसे में सहमति के साथ संस्थाओं में बदलाव की लोकतांत्रिक प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। सरकार को इन सबके बीच तालमेल बनाना होगा। श्री अरविन्दो ने भी इस विशय में लिखा था– "जीवन संस्थाओं का निर्माण करता है। संस्थायें केवल रचना तक ही सीमित नहीं रहती यह जीवन को संजोने और अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनती हैं। अतः 21वीं सदी के भारत को अपनी इन संस्थाओं की चुनौतियों का समाधान निकालने के लिए इस बात को लागू करना चाहिए।

क्र० स० - 01

शिक्षक का नाम- मीनाक्षी पन्त

पुस्तक का नाम- संगीत ज्ञान सुधा

शोध पत्र का शीर्षक - जनजातीय संगीत कुमाऊँ की थारू-बुक्सा जनजाति के धार्मिक गीतों के संदर्भ में

Proceeding - Different Colors of Indian Music

संगोष्ठी का नाम - Different Colors of Indian music

राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी - राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रकाशन तिथि - 2021-2022

ISBN - 978-93-90932-28-3 (PB)

सम्बद्ध महाविद्यालय - राष्ट्रीय संगीतज्ञ परिवार।

प्रकाशक का नाम - अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस
अन्सारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली। 110002

# संगीत ज्ञान सुधा

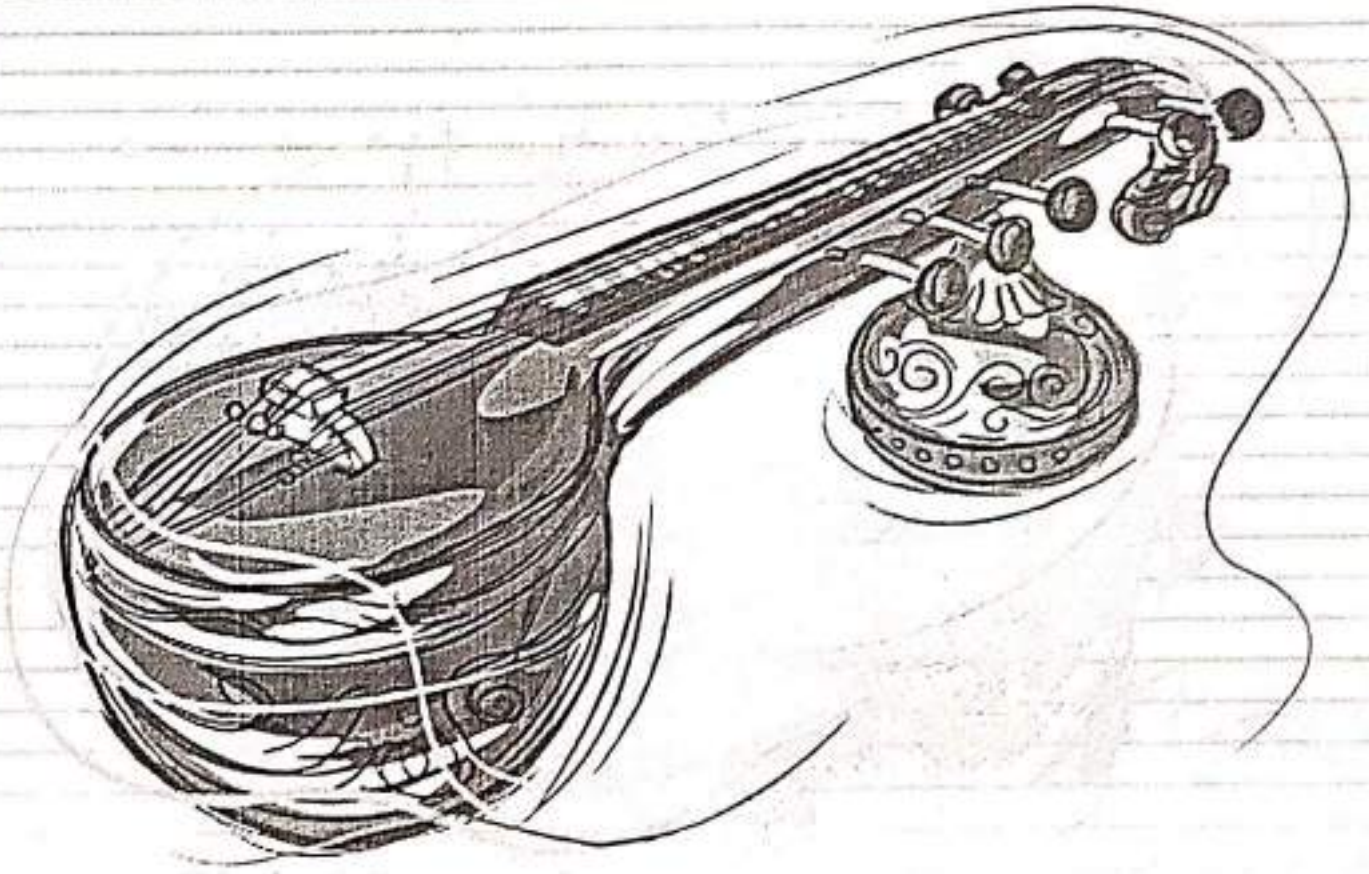

पंडित देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'

arun

**संगीत ज्ञान सुधा** पुस्तक विविध विषयों के शोध पत्रों का अनुपम संग्रह है। इसमें गायन, तबला, नृत्य एवं लोक संगीत के शोध पत्र सम्मिलित हैं जिन्हें देश के कोने–कोने से अनेकों विद्वानों, विदुषियों, शोधार्थियों एवं चिंतकों ने लिखा है। यह पुस्तक एक ओर हिन्दुस्तानी संगीत गायन, तबला, पखावज, अनेकों संगीतज्ञों का व्यक्तित्व, कृतित्व, एवं उनका संगीत में योगदान, भारत के विविध शास्त्रीय नृत्यों के गूढ़ रहस्यों को खोलने में सहायक सिद्ध होगी तो दूसरी ओर कर्नाटक संगीत गायन एवं दक्षिण भारतीय नृत्यों के विविध विषयों की चर्चा करेगी। साथ ही साथ भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत जिनमें ब्रज का लोक संगीत, उत्तराखन्ड की लोक परम्परा, डोगरी पारम्परिक लोक संगीत, जनजातीय संगीत, हवेली संगीत, भक्ति संगीत की विविध धारायें, पुष्टिमार्गीय संगीत आदि के विविध पक्षों को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करेगी। यह शोध पत्र संग्रह ज्ञान का अद्भुत भंडार है जिससे केवल शोधार्थी ही नहीं वरन सम्पूर्ण संगीत जगत विविध भांति लाभान्वित होगा। पुस्तक में हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं के शोध पत्र संकलित हैं।

**पंडित देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'** आगरा नगर के संगीत प्रेमी परिवार में जन्मे पं. देवेन्द्र वर्मा संगीत जगत के सशक्त हस्ताक्षर हैं। आपकी संगीत शिक्षा ग्वालियर घराने के स्व. पं. राम दत्त शर्मा, स्व. पं. गोपाल लक्ष्मण गुणे, स्व. पं. सीताराम व्यवहारे, स्व. पं. पुरुषोत्तम माधव पालखे एवं आगरा घराने के मरहूम उस्ताद शब्बीर अहमद खाँ से सम्पन्न हुई है। वर्तमान में आप किराना घराने के मूर्धन्य गायक पं. मणि प्रसाद जी के सान्निध्य में शास्त्रीय गायन की बारीकियों को आत्मसात कर रहे हैं। आपकी तबला शिक्षा ग्वालियर की पं. पर्वत सिंह परम्परा के मूर्धन्य तबला/पखावज विद्वान स्व. प्रोफेसर लल्लू सिंह जी से हुई है। आप एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिन्दी), एम.म्यूज. (गायन, तबला), बी.एड. साहित्यरत्न, संगीत प्रवीण (गायन, तबला), संगीत अलंकार (गायन), संगीत भास्कर (गायन, तबला), आयुर्वेदरत्न आदि उपाधि धारक हैं। 40 वर्षों से अधिक सांगीतिक अनुभव के धनी पं. देवेन्द्र वर्मा को 100 से अधिक सरकारी और गैर सरकारी सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है आप भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुम्बई, प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद, भातखन्डे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली एवं देश के 20 से अधिक विश्वविद्यालयों के परीक्षक, शोध एवं पाठ्यक्रम समिति के सदस्य तथा निर्णायक, आकाशवाणी ऑडीशन बोर्ड, नई दिल्ली एवं आकाशवाणी प्रतियोगिता के निर्णायक सदस्य हैं। आपकी आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में अनेकों प्रस्तुतियाँ एवं साक्षात्कार प्रसारित हो चुके हैं। आप देश–विदेश के विभिन्न संगीत समारोहों में सांगीतिक प्रस्तुतियाँ, अनेकों विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में वक्तव्य सह प्रदर्शन, संगीत संगोष्ठियों में प्रपत्र वाचन एवं आपके 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। आप राष्ट्रीय संगीतज्ञ परिवार के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में सतत संलग्न हैं।

₹ 595

ISBN 978-93-9093-228-3

9 789390 932283

अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस
4831/24, गोविन्द लेन,
अन्सारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली–110002
फोन : 23272541, 23242541
ई–मेल: arjunbooks2001@gmail.com

# पुस्तक समर्पण

भावभीनी श्रद्धांजलि एवं मधुर स्मृतियों को सादर समर्पित

**प्रोफेसर आदित्य शास्त्री**
कुलपति
बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

एवं

**श्री ईशान शास्त्री**
कनिष्ठ सुपुत्र

# PART - 2 : LOK SANGEET


1. लोक संगीत 71
*–अशोक कुमार*

2. लोक संगीत 81
*–सोना सोनी*

3. भारत के विभिन्न प्रांत एवं उनका लोक संगीतः एक अध्ययन 89
*–डॉ. सरस्वती नेगी*

4. बुन्देलखण्ड के लोक वाद्यः एक सर्वेक्षण 99
*–सुमिति श्रीवास्तव*

5. उत्तराखण्ड का पारंपरिक लोकगीत 'हुड़किया बौल' 110
*–रीता पाण्डे*

6. डोगरी पारंपरिक लोकसंगीतः जम्मू क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में 120
*–पूजा देवी*

7. जनजातीय संगीत कुमाऊँ की थारूः बुक्सा जनजाति के धार्मिक गीतों के संदर्भ में 124
*–मीनाक्षी पन्त*

8. हवेली संगीत का उद्‌भव एवं विकास 134
*–ममता देवी*

9. संगीत की गंगोत्री लोक संगीत 139
*–डॉ0 अनामिका दीक्षित*

10. उत्तराखण्ड के गढ़वाल मंडल के पौड़ी जनपद के लोक संगीत विधाएंः एक अध्ययन 144
*–शुभेन्द्र कान्त शाह*

11. भक्ति संगीत 154
*–भागवत लहुबुवा ढोले*

12. ब्रज का लोक संगीत 161
*–प्रो. डॉ. राहुल मल्हारी भोरे*

# 7

# जनजातीय संगीत कुमाऊँ की थारू: बुक्सा जनजाति के धार्मिक गीतों के संदर्भ में

मीनाक्षी पाठक
शोधार्थी
मोतीराम, बाबूराम राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी (कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल)
meenakshipathak36@gmail.com
Mob: 8279421xxx

## भूमिका

भारत एक विशाल देश है, जिसमें अनेक विविधतायें विद्यमान है। यहाँ अनेक धर्म, सम्प्रदाय, प्रजाति एवं जाति के लोग निवास करते हैं, जिनकी अपनी भाषा, खान–पान, रीति–रिवाज एवं संस्कृति है। सन 1971 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 7 प्रतिशत भाग आदिवासी या जनजातियों द्वारा निर्मित है। लगभग सभी जनजातियाँ ऐसे भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती है, जहाँ सभ्यता का प्रकाश नहीं पहुँचा है। आज भी अनेक जनजातियाँ आदिम स्तर पर ही अपना जीवन व्यतीत कर रही है जबकि दुनियां के अधिकांश देश प्रगति के पथ पर हैं।

[illegible] भौगोलिक क्षेत्रों में [illegible] के कारण यहाँ भिन्न-भिन्न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विषमताओं और सांस्कृतिक विलक्षणताओं के कारण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जनजातियों के नाम से [illegible] इन जनजातियों का अपना कोई [illegible] इतिहास [illegible]

[illegible] जनजाति का अपना एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। इन कारणों से [illegible] सांस्कृतिक रूप से भी भारत की जनजातियाँ आज भी विभिन्न [illegible] मानसिक, राजनैतिक व आर्थिक विकास के विभिन्न एवं [illegible] स्तरों में अवस्थित हैं। यदि जनजातियों के उत्पत्तिमूलक [illegible] दृष्टिपात किया जाय तो हम पायेंगे कि जनजातियों का इतिहास [illegible] वर्षों से भारत में विभिन्न सांस्कृतिक एवं प्रजातीय समूह [illegible] हैं लेकिन कालान्तर में ऐसे सभी समूह की सांस्कृतिक एवं [illegible] समाज का अभिन्न अंग बन गये। इसके पश्चात भी अनेक [illegible] ऐसी भी हैं जो कि एक विशेष प्रकार के सामाजिक [illegible] संस्कारों को अपनी स्मृति में संजाये एवं बाहरी परिवर्तन का [illegible] पिछड़े कबीले का रूप धारण करती चली आ रही हैं। ऐसे [illegible] जाति आदिम जाति तथा जनजाति के नाम से सम्बोधित [illegible] जनजातियों को एक [illegible] वर्ग के रूप में भी जाना जाता है।

जनजाति शब्द को परिभाषित करते हुए डॉ0 मजूमदार लिखते [illegible] एक जनजाति परिवार अथवा परिवारों के समूह का संकलन है जो [illegible] के द्वारा पहचाना जाता है। जिसके सदस्य एक सामान्य [illegible] हैं। सामान्य भाषा बोलते हैं। विवाह, व्यवसाय और आर्थिक [illegible] आदान प्रदान की एक संगठित व्यवस्था का निर्माण [illegible] है। सामान्य तौर से एक जनजाति के सदस्य अपनी जाति में विवाह [illegible] पालन करते हैं। इसकी रचना कई गोत्र समूहों से होती है और [illegible] के द्वारा एक प्रमुख व्यक्ति इसका मुखिया होता है।

[illegible] का सत्ताईसवां राज्य उत्तराखण्ड है। उत्तराखण्ड राज्य [illegible] गढ़वाल दो मण्डलों में विभक्त है। कुमाऊँ मण्डल में उत्तराखण्ड [illegible] जिलों में से 6 जिले समाहित हैं। जिनमें- अल्मोड़ा, नैनीताल,

पिथौरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत तथा उधमसिंहनगर हैं। कुमाऊँ में चार प्रकार की जनजातियाँ पाई जाती है। 1–शौका या भोटियाँ 2– राजी (वनरावत) 3–थारू 4–बोक्सा। प्रस्तुत शोध पत्र में मैं कुमाऊँ के तराई सीमान्त में अवस्थित थारू–बोक्सा जनजातियों के धार्मिक गीतों के विषय में अध्ययन कर रहीं हूँ।

थारू एंव बोक्सा जनजाति उत्तराखण्ड राज्य के उधमसिंहनगर जिले के दक्षिणी सीमान्त क्षेत्र में तराई में स्थित एक महत्वपूर्ण पिछड़ी जनजाति है। यह जनजातियाँ लगभग आठ दशक पूर्व इस तराई क्षेत्र में बाहर से पलायन होकर बसी । तथा इन जनजातियों ने अपने नवीन वास स्थान को रहने के अनुकूल बनाया। इन्होनें अपनी प्राचीन परम्पराओं को संवारने के अतिरिक्त इस वीरान जंगल में जीने के लिऐ विशिष्ट सामाजिक नियम प्रतिपादित किये। थारू एंव बोक्सा समाज की सांस्कृतिक परम्परायें अपने आप में अनूठी है।

थारू एंव बोक्सा जनजाति कुमाऊँ की अत्यन्त प्राचीन जनजातियों में से एक है। जिनकी सांस्कृतिक, धार्मिक एंव सामाजिक विविधतायें हमारी अत्यन्त मूल्यवान धरोहर है, जो कि अतीत के गर्भ में छुपी हुई है। समय के क्षितिज पर अनेक सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ डूब जाती हैं। इतिहास उनकी चर्चा पर गुमनामी की चादर डाल देता है। शेष रह जाते हैं सांस्कृतिक चिन्ह, जो देखने में तो अच्छे लगते हैं परन्तु उनमें ना तो हरकत रह जाती है और ना ही मानवीय सभ्यता के इतिहास को दिशा प्रदान करने की शक्ति या सार्मथ्य। विशाल थारू एंव बुक्सा समाज इस बात का उदाहरण है। मै थारू बुक्सा जनजातियों के धार्मिक गीतों की बिखरी हुई कड़ियों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास करूंगी।

**थारूजनजातीय संगीत**– उधमसिंहनगर जिले में मुख्य रूप से खटीमा, किच्छा, बनबसा, नानकमत्ता, रूद्रपुर, सितारगंज के विभिन्न गांवों में निवास करने वाला थारू समुदाय उत्तराखण्ड राज्य का दूसरा तथा कुमाऊँ क्षेत्र का सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है। उत्तराखण्ड के अलावा उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी, गोंडा, बहराइच, महरागंज, सिद्वार्थनगर आदि जिलों, बिहार के चम्पारण तथा दरभंगा जिलों तथा नेपाल के पूर्व में भेंची से लेकर पश्चिम में महाकाली नदी तक तराई क्षेत्रों में फैले हुये है। थारू जनजाति का निवास क्षेत्र उत्तराखण्ड के उधमसिंहनगर जिले में व उत्तर प्रदेश के दक्षिण पूर्व से

भी पूजते हैं और यह व्रत के दिन निकटवर्ती मेले में जाते है और फलाहार करते है। कार्तिकी पूर्णमासी को शारदा नदी के मेलाघाट स्थान में गंगा स्नान को जाते हैं। थारू अपने बुजर्गों को पूजते हैं। हर एक थारू के मकान के पास एक चबूतरे पर एक देवता स्थापित रहता है। इन देवी देवताओं को कालिका देवी, नगराई देवी,(नगर की देवी) भुंईया (ग्राम देवी) या बूढ़े बाबा कहते हैं। थारू जागर नही लगाते 'गणत' (चावल दिखाकर अपने परिवार के भविष्य के सम्बन्ध में देवताओं से पूछताछ करना) कराते है। थारू समाज में पण्डित के माध्यम से कोई कार्य सम्पन्न नहीं होता है, परन्तु सत्यनारायण की कथा, ब्राह्मण के द्वारा सम्पन्न करायी जाती है। थारू समाज में सुन्दरकाण्ड की कथा तथा नवरात्री स्त्री–पुरूष दोनों ही करते हैं। थारू समाज में घर के बाहर नगराई देवता का मन्दिर बना होता है। यह मन्दिर अधिकतर ऑगन में तुलसी के साथ स्थापित किया जाता है।

थारू समाज में गुड़ियों का त्यौहार, रक्षाबन्धन, बसन्तपंचमी, दीपावली, होली, शिवरात्री, शिवतेरस, कृष्णजन्माष्टमी, कार्तिक पूर्णमांसी, नागपंचमी, चराई उत्सव, तीज पर्व असाढ़ी औथ पर्व (नई फसल आने पर) मनाये जाने वाले महत्वपूर्ण पर्व हैं। इन त्यौहारों में थारू समाज गायन के साथ–साथ नृत्य भी करते हैं। थारू समाज के लोग किसी भी शुभ कार्य आरम्भ करने पर सरस्वती वन्दना, गणेश वन्दना, सत्यनारायण पूजा, तथा नवरात्री की चौकी स्थापित करते हैं, और इस अवसर पर धार्मिक गीत गाते हैं, जो इस प्रकार हैं–

थारू सरस्वती वन्दना गीत–
सरस्वती माता सभा में मेरी लाज रखो।
1–अरे ज्यों–ज्यों ज्ञान बतईयो मेरी माता
बैठ कंठ लिख जईयो।
2– अरे हृदय में बस जईयो मेरी माता
बैठ कंठ लिख जईयो।
3–अरे दीप जलाऊँ, धूप जलाऊँ
अरे तुम्हें मनाऊँ रे माता।
4– कूँदे–फाँदे नाच दिखावे
सिमरऊ सभा के बीच।

2—ऊँचे भवन में माता बैठी, अरी चन्दन तिलक लगाये, अरी बीच
भँवर में नैया फँस गयी कर दो बेड़ापार।

भावार्थः—थारू स्त्री—पुरूष नवरात्री का त्यौहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। वह माता के दरबार को स्वर्ग से भी सुन्दर मानते है। जहाँ दूर—दूर से (सम्पूर्ण देश से) यात्री माँ के दरबार में दर्शन के लिऐ आते है,और मनवांछित फल प्राप्त करते हैं।

**बोक्सा जनजातीय संगीतः**—बोक्सा जनजाती उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल में तराई—भाबर क्षेत्र में स्थित उधमसिंहनगर जनपद के बाजपुर, गदरपुर, गूलरभोज, एवं काशीपुर, नैनीताल रामनगर, पौढ़ी—गढ़वाल के दुगड्डा, तथा देहरादून के बिकासनगर, डोईवाला, एवं सहसपुर बिकास खण्डों में 173 गाँव में निवास करती है। उधमसिंहनगर के बाजपुर, काशीपुर, गदरपुर आदि स्थानों में इनकी संख्या अधिक है। बाजपुर, काशीपुर, और गुलरभोज को सम्मिलित रूप से बोक्साड़ कहते हैं।

बोक्सा जनजाति की संस्कृति अपने आप में अनूठी है। बोक्सा जनजाति के लोग हिन्दू धर्म के काफी निकट है। यह लोग महादेव, काली, दुर्गा, लक्ष्मी राम कृष्ण तथा अपने स्थानीय देवी—देवताओं की पूजा करते हैं। काशीपुर की चामुण्डा देवी इस क्षेत्र के बोक्साओं की सबसे बड़ी देवी मानी जाती है।

बुक्सा जनजाती के लोग तीज—त्यौहार एवं मेलों के अत्यधिक काशीपुर शौकीन होते हैं। वे इन अवसरों पर अपनी क्षमता से बढ़कर व्यय करते हैं। बुक्साओं में चैती मेला वर्ष का प्रमुख व प्रथम त्यौहार है। यह मेला मार्च—अप्रेल (चैत्र) माह में काशीपुर देवी के मन्दिर में क्षेत्रवासियों द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह मेला लगभग 15 दिन तक चलता है। बुक्सा जनजाति के लोग समूह बनाकर मेले में आते है। और काशीपुर देवी को प्रशाद के रूप में इन लोगों के द्वारा घी, बताशे,धूप, लौंग, अगरबत्ती तथा नारियल का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। तथा कुछ बुक्सा परिवार जिसने देवी के मन्दिर में वन्दना (वचन देकर मन्नत माँगी हो) की हो, वह मनोकामना पूर्ण हो जाने पर इसी अवसर पर देवी को बकरे की बलि चढ़ाता है। जेठ माह (मई—जून)में बुक्साड़ में 'ग्राम खेड़ी देवी' अर्थात् 'भवानी' को नई फसल के तैयार हो जाने के उपलक्ष्य में पूजा दी जाती है। भादव (अगस्त—सितम्बर) माह में हाने वाली नवरात्री के दौरान बुक्साओं द्वारा 'नौवी पूजा' की जाती



है। कार्तिक (अक्टूबर—नवम्बर) माह में दीपावली के अवसर पर बुक्सा लोगों के गोवर्धन पूजा की जाती है। प्रायः गोबर से दो बैलों के प्रतीक बनाये जाते हैं तथा उन्हें घर के भीतर मन्दिर में स्थापित कर दिया जाता है। 'गुलर' बुक्सा जनजाति के महत्वपूर्ण आराध्य एंव सिद्ध हैं। इन्हें बाबा मनीराम (छोई में स्थित मन्दिर एक सिद्ध पुरूष) का गुरू माना जाता है। ये एक महान सिद्ध पुरुष थे। रामनगर शहर का होली का पर्व गुलरसिद्ध में गुलाल चढ़ाने के बाद ही प्रारम्भ होता है। प्राचीन मान्यता के अनुसार माँ भगवती बाल सुन्दरी से पहले यहीं पर खोखरा देवी के मन्दिर में पूजा अर्चना करने की परम्परा है।

बुक्सा लोग आत्मा पुर्नजन्म तथा पितृ—पूजा में विश्वास करते हैं। लेकिन इस समाज में भूमिया, भूमसेन तथा स्थानीय देवी देवताओं को विशेष महत्व दिया जाता है। व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसका दोहरा दाह संस्कार करने का प्रचलन है। प्रत्येक बुक्सा परिवार द्वारा वर्ष में दो बार (चैत्र तथा भाद्रपद) पीपल अथवा बड़ के वृक्ष के नीचे पितृ—पूजा की जाती है।

बुक्सा समाज में प्रतिदिन वाली पूजा घर के अन्दर होती है, तथा सामूहिक पूजा ग्राम देवी के थान पर की जाती है। बुक्सा समाज में सामाजिक और धार्मिक कार्यों को शुरू करने से पहले गाँव के छोर पर स्थित देवी—देवताओं के थान पर जाकर ग्यारह देवियों की पूजा की जाती है। मान्यता के अनुसार सभी देवियों की अलग—अलग पूजा की जाती है। देवियों में लक्ष्मी, कालिका, दुर्गा माता, चामुण्डा देवी, हुल्का देवी, बाल सुन्दरी, अटरिया वाली देवी, सुन्दरी देवी, मंशा देवी, तथा भूमसेन देवी को ग्राम देवता के रूप में पूजा जाता है। जबकि राणा थारू भूमसेन को ग्राम देवी के रूप में पूजा करते है। इनमें से कुछ देवियों को बलि लेने वाली देवियाँ माना जाता है और कुछ देवियों को वैष्णव देवियाँ माना जाता है। 'भरारा' (थारू—बुक्सा समाज के पण्डित) द्वारा सभी देवियों की पूजा—पद्धति और उनकी भेंट अलग—अलग निर्धारित की जाती है। बुक्सा समाज के लोग देवी—देवताओं के अलावा अपने कुल देवताओं को भी पूजते हैं। इस प्रकार बुक्सा समाज में देवी—देवताओं के मन्दिर में जाकर पूजा करते हैं, तथा देवी—देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न प्रकार के धार्मिक गीत गाते हैं जो इस प्रकार से हैं—

बुक्सा नवरात्री गीत

मैं बलिहारी माता तेरे आवन को।
1—जो मेरी माता थानों में आयी, तो मन्दिर की दुवर बिनाय रखती।
2—जो मेरी माता डगड़ (रास्ता) में आयी,तो डगड़ की गुड़ (पथ्थर) बिनाय रखती।
3—जो मेरी माता खेड़े (गॉव) में आयी, तो खेड़े की दूवर बिनाय रखती।
4—जो मेरी माता दारे (ऑगन) में आयी, तो हरी—हरी गोबरी लिपाय रखती।
5—जो मेरी माता देहरी (देहली) में आयी तो चन्दन चौका पुराय रखती।
6—जो मेरी माता कै भूख लगेगी, तो हलुवा, पूरी मंगाय रखती।
7—जो मेरी माता कै प्यास लगेगी, तो सोने को गडुवा (लौटा) भराय रखती।
8—जो मेरी माता कै नींद लगेगी,तो तोषक—तकिया बिछाय रखती।
9—जो मेरी माता घर को चली है,तो कोस ही कोस (दूरी मापना) पहुँचाये रखती।

भावार्थः—बुक्सा जनजाति के गॉव के लोग चैत्र की नवरात्री में जल चढ़ाने अपने कुलदेवी के मन्दिर में जाते हैं, तो उस समय यह गीत गाते हैं।

बुक्सा रात्रि जागरण गीत

मेरी नौ दिन की मेहमान शारदा ठाड़ी रहियो मन्दिर में।
1—जो मेरी माता कै भूख लगेगी, भुजन मंगामो आधी रात शारदा—
2—जो मेरी माता के प्यास लगैगी, पनिया मंगामो आधी रात शारदा—
3—जो मेरी माता कै गरमी लगेगी, पंखा डुलावो आधी रात शारदा—
4—जो मेरी माता कै नींद लगेगी, सिजिया बिछावों आधी रात शारदा—

भावार्थः— बुक्सा समाज के लोग नवरात्री में रात्री जागरण करते समय यह गीत गाते हैं और यह सभी देवियों को अलग—अलग ढंग से पूजते हैं।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है, कि प्रत्येक धार्मिक कार्यों के अवसर पर कुमाऊँ



थारू—बुक्सा समाज में संगीत का अंश साथ—साथ चलता है। इस शोध पत्र को लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य थारू—बुक्सा जनजातियों के धार्मिक गीतों का विस्तृत रूप से अध्ययन करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


- जोशी डॉ० योगेश चन्द्र, 2011, थारू जनजाति एक अध्ययन, पृष्ठ संख्या–25,30, संस्कृति विभाग (उत्तराखण्ड)
- पाण्डे बद्रीदत्त, 1990, कुमाऊँ का इतिहास, पृष्ठ संख्या–549, श्याम प्रकाशन (अल्मोड़ा)
- अग्रवाल डॉ० जी० के०, 2000, सामाजिक मानव शास्त्र, पृष्ठ संख्या–356, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा०) लि०
- अग्रवाल बलवीर कुमार, 2013, इतिहास थारू—बुक्सा जनजातियों का अन्वेषण ग्रन्थ, दो भागों में एक साथ प्रकाशित, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या–165, सानू कम्यूनिकेशन, सितारगंज, रोड खटीमा, (उत्तराखण्ड)
- अग्रवाल बलवीर कुमार, 2013, इतिहास थारू—बुक्सा जनजातियों का अन्वेषण ग्रन्थ, दो भागों में एक साथ प्रकाशित, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ संख्या–50,51 सानू कम्यूनीकेशन सितारगंज रोड, खटीमा, (उत्तराखण्ड)
- नेगी डॉ० गिरवर सिंह, जोशी डॉ० मंजुला, हिमालय के तराई के प्रकृतिपुत्र, पृष्ठ संख्या–144,148 (नई दिल्ली)

# RASHTRIYA SANGITAGYA PARIWAR

Organizes

## NATIONAL RESEARCH WEBINAR

(Different Colors of Indian Music)

# Certificate

This is to certify that Ms.Meenakshi Pant

Designation Research Scholar Institution MBG PG COLLEGE, HALDWANI, KUMAUN UNIVERSITY, NAINITAL

has participated and presented his / her research paper online on 27th & 28th February 2021 (Saturday & Sunday) successfully. The title of research paper was 'जनजातीय संगीत : कुमाऊँ की थारु - बुक्सा जनजाति के धार्मिक गीतों के सन्दर्भ में'

We wish him / her all success in future.

# Covid-19 : Changing Paradigms of Education and Society

# कोविड-19 : शिक्षा और समाज के बदलते प्रतिमान

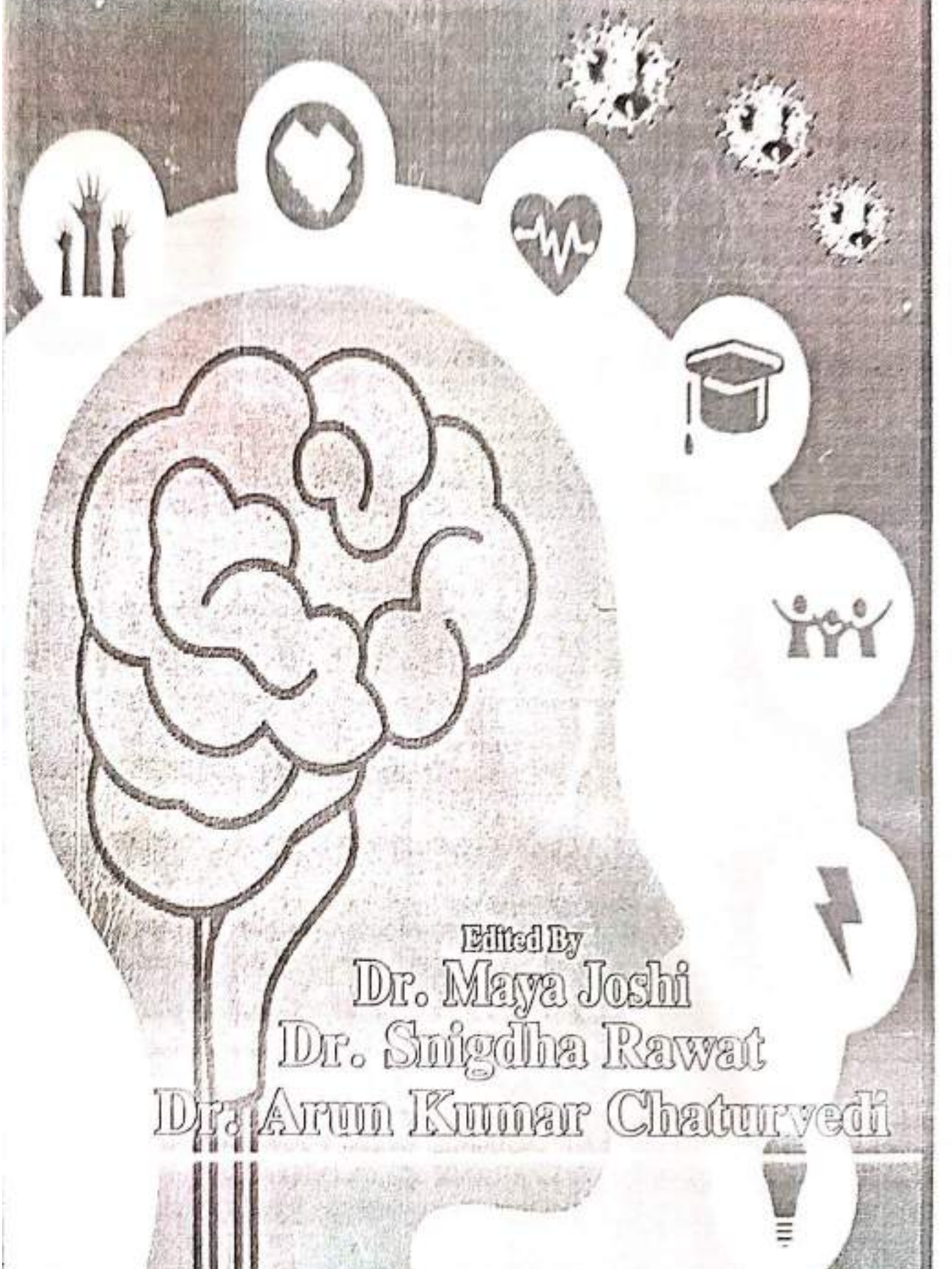


Edited By

Dr. Maya Joshi

Dr. Snigdha Rawat

Dr. Arun Kumar Chaturvedi

★ Covid-19 : Changing Paradigms of Education and Society
(कोविड–19 : शिक्षा और समाज के बदलते प्रतिमान)

★ **Editor :**
Dr. Maya Joshi, Dr. Snigdha Rawat,
Dr. Arun Kumar Chaturvedi

★ © Editor

★ **ISBN : 978-93-87697-81-2**

★ Edition : 2020

★ Price : ₹ 180.00 $10

★ *Authorised Distributors*
**NIKHIL PUBLISHERS & DISTRIBUTORS**
37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony, Shahganj,
Agra (UP)-10 INDIA
Mob.: 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
Website : www.nikhilbooks.in

*Publisher*
**Ishika Book Distributors, Agra**
43/UK/425/25, Street No. 3, Umakunj
Behind K. K. Nagar, Sikandra, Agra-7 (U.P.)

★ Type Setting
Shikha Graphics

★ Printed By :
Anika Digital

## प्रो० विजया रानी ढौंडियाल

(हेड एवं डीन, आइ.ए.एस.ई., फैकल्टी ऑफ एजुकेशन, कुoविoविo परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि बी.एड. विभाग, ल.सिं.म. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़ द्वारा 02 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी, जिसका शीर्षक "शिक्षा का बदलता परिदृश्यः चुनौतियाँ एवं समाधान" था। का आयोजन दिनांक 08–09 अगस्त, 2020 को शिक्षा, समाज तथा शोध कार्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना था।

उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य शिक्षण के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण शोध कार्यों को बढ़ावा देना है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ रचनात्मकता का विकास भी हो सके। इस प्रकार के कार्यक्रम महाविद्यालय की शैक्षणिक प्रसिद्धि में श्रीवृद्धि तो करते ही हैं साथ ही साथ विद्यार्थियों, शोध छात्रों एवं अध्यापकों को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं, जहां नवीन ज्ञान का प्रस्तुतीकरण और विचारों का आदान–प्रदान हो सके।

दो दिवसीय वेबीनार में देश एवं विदेश के विभिन्न प्रांतो से आये हुए विद्वतजनों शोधकर्त्ताओं द्वारा प्रस्तुत किये गये शोध पत्रों को संकलित करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना प्रशंसनीय प्रयास है। आशा है, यह प्रयास सार्थक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अरुण

# Contents


1. Impact of Education on Tribal Community
**Dr. Sarika Kumari** 11

2. Covid-19 Pandemic: An eye opener on Indian Education System & Employment Policies of Government
**Asha** 21

3. Alienation and Isolation in Kapur's "Difficult Daughters
**Pawan Pratap Singh** 29

4. Impact of COVID-19 on the Teaching-Learning Process
**Shalini Singh** 35

5. Role of ICT in Education and NDLI
**Reena Kumari** 40

6. Online Teaching Learning Process in the Perspective of Challenges and Suggestions for Secondary Education
**Dr. Maya Joshi** 45

7. Reviving the Ghost Villages of Uttarakhand: Reverse Migration Post Covid 19
**Dr. Snigdha Rawat** 54

8. नई शिक्षा नीति और छात्र
**डॉ0 शशि बाला वर्मा** 63

9. उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में कोरोना महामारी का शिक्षा पर प्रभाव (समस्या एवं समाधान) (चिलियानौला नगरपालिका के विशेष संदर्भ में)
**डॉ0 नमिता मिश्रा** 66

10. शिक्षा का बदलता परिदृश्यः चुनौतियाँ एंव समाधान (महामारी कोविड–19 के विशेष सन्दर्भ में)
**विनीता** 72

11. भारतीय शिक्षा प्रणाली पर कोविड–19 का प्रभाव
**डॉ0 नरेन्द्र सिंह धारियाल** 76

# 4. Impact of COVID-19 on the Teaching-Learning Process

Shalini Singh

Today the world is facing the most crucial global health calamity and the tremendous challenge that has not been witnessed in the recent past. The outbreak of Corona Virus disease-2019(COVID-19) has created a health crisis that had a huge impact on the way we perceived our world and everyday lives. The disease was first reported in Wuhan, China, and subsequently spread across the world causing enormous health, economic, environmental, and social challenges to the entire human population. All the countries are trying to slow down the spread of the virus by testing and treating patients, limiting travel, and canceling large gatherings.

In our country, the Government took a strong stand against the pandemic attack in the mid of March. From March 24, a complete lockdown was imposed by the government. Throughout the lockdown, the people have restricted themselves in their homes. There have also been many constraints imposed on the internal and external borders of the country. The schools and colleges have completely shut down so far.

Most governments around the world have temporarily closed educational institutions in an attempt to contain the spread of COVID-19. As of July 2020, approximately 1.725 billion learners are currently affected due to school closure in response to the pandemic. According to UNICEF monitoring, 106 countries are currently implementing nationwide closure and 55 are implementing local closure, impacting about 98.6% of the world's student population.

In India, primary, secondary and higher levels of educational institutes shut down for an uncertain time due to lockdown declared by the Indian Government. This is a crucial time for the education sector; board examinations, school admissions, entrance tests of various universities, and competitive examinations are conducted during this period. As the day pass by with no immediate solution to stop the outbreak of COVID-19, School and university closure will not have a short term impact on the continuity of learning for more than 285 million young learners in India but also engender far reaching economic and societal consequences (Chaudhary, 2020).

The crisis is always paired with opportunities and it's time to appreciate the full potential of technologies for teaching and learning process. At the time of this medical emergency and keeping the student's safety in mind along with their academic concern, different stakeholders in the education space have been endorsing online teaching-learning processes so that the learning only grows and does not stop.

Online Teaching-Learning Process – many private schools and other educational institutes started online learning through virtual classes. Technology played a vital role in the online teaching-learning process. The teachers who are not familiar with the online teaching-learning platform and apps, for using this training is also provided through online workshops and videos to use technologies to facilitate virtual classes. Initially, the teachers who faced many problems in using different online teaching apps, gradually expertise in them, and now many teachers are using Google Classroom, Google Meet, Microsoft Team, Zoom Meet, etc. for the teaching-learning process.

Shift from Offline to Online Mode – the classroom centered teaching-learning process is shifted to online mode in the following way-

Classroom – Virtual classes

Blackboard – mobile or computer screen

Face to face teaching – online communication

Fixed school hours –flexible time- table

Books – E-Content

Learning – Blended learning

Playground activities – home Activities

**Positive Impact of COVID-19 on Teaching-Learning Process** – Any change that is so disruptive is also likely to bring with it some new opportunities that will transform the whole education system. The changes brought in the education system due to COVID-19 are as follows;

1. Enhancement in Digital Skills of Teachers and Student – During the lockdown, it was impossible to conduct classes, and thus the educational institutions shifted to virtual classrooms. For implementing this, many virtual platforms are used like Google Meet, Cisco Webex, Microsoft Teams, Zoom meet.

2. Blended Learning – schools and colleges are shifting to a model of blended learning where both face to face and online learning occurs as required. This methodology is called hybrid learning.

3. Online Learning Material – During the period of the pandemic, the schools and colleges have a great opportunity to develop and improve the quality of learning materials that are used in the teaching-learning process.

4. Learning Management System – many companies have the opportunity to develop a learning management system. Cisco Webex. TCS ion, are developing LMS for Universities and Colleges.

5. Collaborative Work – This is the time when teachers across the nations are coming together for collaborative teaching and learning and are benefitted by each other.

6. Reform in Online Education – Due to shifting to online mode the educational institutes are taking good measures for digital learning, they are installing a server for online teaching. This is a reform in the education system that has never been seen before this time.

**Negative Impact of COVID-19 on Teaching-Learning Process** – Besides the above mentioned positive impacts some negative impacts are also reported, which are as follows;

1. **Health-Related Problems** – Due to spending a long time on mobile and computer screens adverse impacts are seen on health like

eye problem, Eye Specialist Dr. S. Natrajan of Mumbai told that common complaints include irritation, pain, and swelling in eyes. besides this, headache, pain in shoulder, neck, and other body parts also reported. Concerning all the above factors MHRD issued PRAGYATA guidelines for digital education in which particular hours are restricted for different aged students.

2. **Lack of Resources** – Another negative impact of online teaching-learning is that the students from the low-income group have no Smartphone, laptops; computers so they are unable to attend online classes, some schools also have no facility to conduct online classes.

3. **Passive Learning** – The sudden shift to online learning when teachers and students are not ready and the curriculum was not designed for digital education has created the risk of most of the students becoming passive learners.

4. **Untrained Teachers for Online Education** – online education is a special type of methodology and not all teachers are good in it or at least not all of them were ready for this sudden transition.

The impact of COVID-19 can be seen on the whole education system as well as the teaching-learning process. About five months have passed but still, all the private and government schools and colleges are not able to conduct online education. People are trying to adopt new technologies, especially in the education sector.

In PRAGYATA guidelines for digital Education issued by the Ministry of Human Resource development give the concept of Digital Education;

Digital education is an evolving area that is primarily concern with the teaching-learning process using the digital medium. The continuous advancement in the field of Information and Communication Technology has made multiple modes of digital education possible. With regards to the availability of digital infrastructure Indian households can be classified into six categories:

1. Computer/Laptops/Smartphone and a 4G internet connection as well as a television set with DTH/Cable TV connection.

2. Smartphone with 4G network
3. Smartphone with limited (2G/3G) or no access to the internet.
4. Television set with a DTH/Cable connection.
5. Radio set or basic mobile phone with FM
6. No digital device

All the above-mentioned households used for digital education are transforming the whole teaching-learning process at the time of the pandemic.

As Plato once said; "Necessity is the mother of Invention". Online Teaching is the necessity of today and educational institutes are trying to conduct online teaching so that students can be benefitted until the college will be reopened for students.

**References:**


1. Choudhary, Richa (2020). COVID-19 Pandemic; Impact and Strategies for Education Sector in India, government.economictimes.indiatimes.com
2. Dhawan, Shiwangi (2020). Online Learning; A Panacea in The Time of COVID-19 Crisis. Journal of Educational Technology System 2020 Vol.49 (1)5-22
3. Hyseni, Daraku Zmira and Hoxha, Linda(2020).The Impact of COVID-19 on Education and The Well-Being of Teachers, Parents and Students, Challenges Related to Remote(online) Learning and Opportunities for Advancing the Quality of Education, www.Research.net/publication/341297812
4. https;//en.unesco.org/covid19/educationresponse
5. http;//en.m.wikipedia.org/wiki/impact_of_the_COVID-19_pandemic_on_education



Asst. Professor, B.Ed. Dept.
Chandrawati Tiwari Girls P.G. College,
Kashipur (U.S.N.) Uttarakhand, 244713
E-Mail:shalinisingh7636@gmail.com
Mobile: 9456383036

Dr. Maya Joshi is currently an Assistant Professor in B.Ed. Department in L.S.M.G.P.G.College, Pithoragarh (Uttarakhand), India. She is M.A. English and holds B.Ed., M.Ed., and Ph.D. Degree in education from Kumaon University, Nainital. She has an experience of 12 years of teaching and extension activities. She has published one book, nearly 10 research paper and many articles in different journals and magazines she has presented more than 30 research paper in national and international seminars. Her subject with specialization is educational psychology and English methodology. She is member of I.A.T.E. (Indian Association of Teacher Education).

E-Mail : mayajoshi.joshi22@gmail.com

Dr. Snigdha Rawat is Assistant Professor, Department of Sociology, M. B. Govt. P. G. College, Haldwani. She holds B.Sc., M.A. (Sociology) and Ph.D degree from Kumaun University, Nainital. She has an experience of 12 years of teaching and extension activities. She has published one book, nearly 10 research papers and many articles in different journals and magazines. She has presented more than 30 research papers in various national and international conferences. She is also an assistant co-ordinator and academic counsellor at IGNOU study centre, Haldwani.

E-mail-snigdha.910@gmail.com

Dr. Arun Kumar Chaturvedi is working as an Assistant Professor of Education (Department of B.Ed.) at Laxman Singh Mahar Government P.G. College, Pithoragarh, Uttrakhand, India. He hails from Chakrajai village of district Azamgarh, Uttar Pradesh. He is a triple MA in English, Hindi, and Education. He holds M.Ed., MCA, NET, and Ph.D degree from reputed institutions. He has authored 2 books and 18 books are to his credit as an Editor. His 12 research papers have been published in peer-reviewed and UGC CARE listed journals. He has successfully convened 08 National Seminar, International Seminar and International Webinar. He has participated and presented his papers in more than 70 International Seminars, National Seminars, National and Regional Workshops. He also works as an academic counsellor of IGNOU, New Delhi and UOU, Haldwani. He has been honoured with prestigious awards like SAHITYA BHUSHAN by Madhya Pradesh Siksha Samiti, Gwalior, MP on 16th Dec 2017, HINDI SEVI SAMMAN by Vishwa Hindi Manch Bharat on 7th October 2018 and SIKSHA GAURAV by Sanskar Bharti and Vishwa Hindi Manch Bharat on 10th October 2019. He has a life time membership in IATE.

Mobile - 9450608657 E-mail - arunchaturvedi9@gmail.com


Also available on amazon | Nikhil Publishers Agra | kindle

Publishers

Ishika BOOK DISTRIBUTORS, AGRA

Authorised Distributor

Nikhil Publishers & Distributors

37, 'Shivram Kripa' Vishnu Colony,
Shahganj, Agra-282010 (U.P.) India
Mobile: 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
Visit us : www.nikhilbooks.in

Covid-19 : Changing Paradigms of Education and Society

कोविड-19 : शिक्षा और समाज के बदलते प्रतिमान

ISBN : 978-93-87697-81-2

₹ 180.00 $ 10